चतुर्थ अध्याय

मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं

आज हम जिस युग में सांस ले रहे हैं, वह एक वैज्ञानिक एवं गतिशील युग है। जिसकी स्थिति आज संघर्षमय है। इस संघर्षमय युग में संसार का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां कोई न कोई समस्या विद्यमान न हो। समस्या के अस्तित्व के बारे में सोचा जाए तो ऐसा प्रतीत होता है कि, 'समस्या का अस्तित्व उतना ही पुराना है जितना की मनुष्य का अस्तित्व।' मनुष्य के अस्तित्व के साथ ही समस्या का उदय हुआ होगा, क्योंकि अगर समस्या ही नहीं होती तो मनुष्य सभ्यता का विकास भी संभव न होता। डॉ. सीलम वेंकटेश्वरराव के मतानुसार "शरीर और छाया या आत्मा एवं शरीर का जो नित्य एवं शाश्वत संबंध है वहीं संबंध समस्या एवं मनुष्य जीवन का है।"[1]

मानव जीवन का कोई भी ऐसा हिस्सा नहीं है, जिसे किसी-न-किसी समस्या ने घेर न रखा हो। जिंदगी में प्रति दिन मानव के सामने जो समस्याएं आती हैं उन्हें समाप्त करने में, सुलझाने में वह दिन-रात व्यस्त रहता है। कभी-कभी उसे अपनी आत्माहुति भी देनी पड़ती है। इन्हीं समस्याओं ने साहित्य को भी अपने पाश में जकड़ रखा है। साहित्यकार अपनी रचनाओं में किसी-न-किसी समस्या को केंद्रबिंदु बनाकर उसकी ओर समाज तथा पाठक का ध्यान खींच लेता है। वह समस्या के अंतर-बाह्य स्वरूप से परिचित कराके नई दिशा तथा प्रेरणा देता है। इस प्रकार साहित्यकार समाज में नई क्रांति की ज्योति जलाता है।

संस्कृत भाषा के 'सम्' उपसर्ग तथा 'अस्' धातु के संयोग से 'समस्या' शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। 'सम्' का अर्थ है... 'एकत्र', तथा 'अस्' का अर्थ है - 'फेंकना' या 'रखना' अर्थात एक रखना या करना।

विभिन्न कोशकारों ने जिस रूप में 'समस्या' शब्द को व्याख्यायित किया है उसका संक्षिप्त अवलोकन इस प्रकार है -

4.1 समस्या : अर्थ

4.1.1 मानक हिंदी कोश ((सं.) रामचंद्र वर्मा)

समस्या - स्त्री (सं समस्या - टाप)

1. मिलने की क्रिया या भाव। मिलन।
2. मिश्रण। संघटन।
3. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज में न हो सकता हो।कठिन या बिकट प्रसंग।
4. छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य रचना के कैशल की परीक्षा करने के लिए इस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप पूरा छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।

4.1.2 हिंदी शब्द सागर ((सं.) श्यामसुंदरदास)

समस्या - संज्ञा - स्त्री

1. संघटन
2. मिलने की क्रिया मिश्रण।
3. किसी श्लोक और छंद का वह अंतिम पद या टुकड़ा जो पूरा छंद या श्लोक बनने के लिए तैयार करके दूसरों को दिय जाता है और जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छंद बनाया जाता है।

4.1.3 प्रामाणिक हिंदी कोश ((सं.) रामचंद्र वर्मा)

1. वह उलझनवाली विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज न हो सके। कठिन या बिकट प्रसंग।
2. छंद का वह अंतिम चरण या पद जो पूरा छंद बनाने के लिए कवियों के सामने रखा जाता है।

4.1.4 भाषा शब्द कोश ((सं.) रमाशंकर शुक्ल))

समस्या - संज्ञा स्त्री, सं.

कठिन या जटिल प्रश्न, गुढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्व पद्य रच जाता है। संघटन, मिश्रण, मिलने का भाव या क्रिया। किसी समस्या के सहारे किसी पद्य को पूर्ण करना।

4.1.5 आधुनिक हिंदी शब्द कोश ((सं.) गोविंद चातक)

1. मिलने की क्रिया
2. वह उलझन जिसका निराकरण कठिन हो; कठिन प्रसंग, कठिन स्थिति, कठिनाई।

इस प्रकार विभिन्न कोशकारों के अनुसार 'समस्या' शब्द के अर्थबोध के बाद 'समस्या' की परिभाषा इस तरह है -

4.2 समस्या : परिभाषा

'डॉ. सीलन वेंकटेश्वरराव' के मतानुसार ''चेतन के स्तर पर जब परस्थितियां विषम होकर उलझ जाती हैं तो स्वयमेव समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसकी स्थिति सहज होती है, जो मनुष्य को संघर्ष के लिए प्रेरित करती है।''[2]

इस प्रकार समस्या की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि 'मनुष्य के जीवन में जब परस्पर विरोधी परस्थितियों के कारण जो संघर्ष निर्माण होता है, उसी संघर्ष को समस्या कह सकते हैं।'

इस प्रकार समस्या की परिभाषा स्पष्ट होती है। मनुष्य जीवन में उपस्थित समस्याओं का वर्गीकरण कई प्रकारों से किया जाता है जैसे - सामाजिक समस्या, आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, शारीरिक समस्या, मानसिक समस्या, वैवाहिक समस्या, पारिवारिक समस्या आदि। मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं इस लघुशोध प्रबंध का विषय होने के कारण अधोलिखित पंक्तियों में हम पारिवारिक समस्याओं को विस्तार से विश्लेषित करेंगें -

4.3 पारिवारिक समस्या

हमारे समाज में परिवार का अनन्य साधारण महत्त्व है। समाज का निर्माण ही मुख्यतः परिवार से होना है। इसी कारण दूसरे किसी समूह की अपेक्षा परिवार का ही प्रभाव सामाजिक जीवन पर पड़ता है। मनुष्य समाजशील प्राणी है इसलिए परिवार के बिना उसका अस्तित्व ही नहीं है। मनुष्य को अपने जन्म, पालन-पोषण, सुरक्षा, शिक्षा और अन्य अनेक अवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरों के सहयोग की अवश्यकना पड़ती है और यह सहयोग सिर्फ परिवार से ही मिल सकता है। इसके अतिरिक्त काम-वासना जैसी शर्तें मानव अकेला पूरा नहीं कर सकता इस शर्त को पूरा करने के लिए पुरुष को स्त्री की और स्त्री को पुरुष की जरूरत होती है। इस प्रकार काम वासना की संतुष्टि के लिए स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के साथ मिलकर रहने लगे इसीसे संतानोत्पत्ति होती गई। इस तरह से एक-दूसरे की और बच्चों की जीवन धारणा की चिंता से परिवार का जन्म

हुआ होगा ऐसा माना जाता है। हर एक व्यक्ति पर जन्म लेने के बाद सबसे पहले प्रभाव परिवार का ही पड़ता है।

परिवार में जहां एक ओर प्रेम, ममता, आदर्श, सच्चरित्रता, सदाचार, स्वच्छ मानसिकता, सुखी दांपत्य, एक विवाह आदि का अस्तित्व होता है तो दूसरी ओर विकृति, कुष्ठा, डर, विलासिता, स्वार्थान्धता, रूढ़िवादिता, तलाक, बेमेल विवाह जैसी समस्याएं भी उत्पन्न होती रहती हैं। मालती जोशी ने अपनी कहानियों के द्वारा इन्हीं पारिवारिक समस्याओं को स्पष्ट किया है। साठोत्तरी काल की महिला लेखिकाओं के बारे में डॉ. पुष्पपाल सिंह का मत है, ''महिला कथाकारों की कहानियां विशेष दृष्टि से ताजगी ली हुए हैं। अब तक कहानी नारी जीवन को पुरुष की दृष्टि से ही देखती आई थी किंतु यहां प्रथम बार नारी ने नारी मन के अंतर गहरावों में झांककर सर्वथा अन छुए प्रसंग, स्थितियां और समस्याएं बिना किसी वर्जना भाव के प्रस्तुत कर जीवन की कहानी का सत्य बनाया।''[3]

साठोत्तरी महिला कहानीकारों ने अपनी भोगी और देखी हुई जिंदगी के अनछुए पहलुओं को समस्त विशेषताओं के साथ वाणी दी है। मालती जोशी इसी युग की संवेदनशील कथाकार होने के कारण उन्होंने भी समकालीन जीवन के समस्त पहलुओं को उजागर किया है। उनकी कहानियों में चित्रित समस्याएं यों हैं -

4.4 पारिवारिक विघटन

हमारे देश में प्राचीन काल से प्रचलित संयुक्त परिवार की परंपरा की सुदृढ़ नींव आज हिलती हुई दिखाई दे रही है, उसकी जड़े टूट रहीं हैं। जिससे संयुक्त परिवार की आधार शीला कई खंड़ों में विभाजित हो गई है। 'अर्थाभाव' की विकटता से आज संयुक्त परिवार की परंपरा विघटित हो रही है। अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से बे-रोक-टोक जीवनयापन करने की प्रवृत्ति के विकास से स्वतंत्र रहने की इच्छा ने संयुक्त परिवार को छिन्न-भिन्न कर दिया और उससे एकल परिवारों का जन्म हुआ। डॉ. उषा यादव के मतानुसार, ''आज परिवार का अर्थ पति-पत्नी एवं बच्चे रह गया है। बाल विवाह की प्रथा खत्म हो जाने के कारण परिपक्व आयु का नवविवाहित युगल अब अपने बीच किसी अन्य परिवारजन का हस्तक्षेप सहन नहीं कर पाता इसलिए संयुक्त परिवार प्रथा धीरे-धीरे विनष्ट होती जा रही है, लगभग हो चुकी है।''[4] मालती जोशी के कहानियों में चित्रित पारिवारिक विघटन की समस्याएं इस प्रकार हैं -

4.4.1 बहू का बर्ताव

आज-कल की शिक्षित बहू जब ससुराल में आती है तो उसे अपने सास-ससूर बोझ के समान लगते हैं। इसी कारण वह उनके साथ गलत व्यवहार करती है। और अपने पति के साथ अलग रहती है इससे पारिवारिक

विघटन की समस्या उपस्थित होती हुई दिखाई देती है। 'अंतिम संक्षेप' कहानी में चित्रित बहू अलग शिफ्ट होने का प्रस्ताव रख देती है और कारण के रूप में बाबूजी की पीने की आदत को रख दिया जाता है। इस बात से मां को दुःख तो बहुत होता है। फिर भी वह अपने बेटे को उसी शहर में अलग घर बसाने की अनुमति देती है। उसके बाद बाबूजी की भी मृत्यु हो जाती है। पर मां अकेली रहती है। इसी बीच बेटे को दो बच्चे होते हैं पर वह उनसे जी खोलकर प्यार भी नहीं कर सकती। इसलिए वह अपना एक कमरा एक छोटे परिवार को किराए पर देती है ताकि उन्हें अकेले न रहना पड़े। वह अपना सारा संचित स्नेह किराएदार के बच्चों पर लुटा देती है, पर यह बात भी महिमा को अच्छी नहीं लगती। तो मां महिमा से कहती है, ''हां, किराया तो आता, पर ऑफिसवालों से रौनक तो नहीं होती न बहूरानी वह तो बालगोपालों से ही होती है और अब इस उम्र में मुझे प्रायवेसी की नहीं साथ-संग की जरूरत है। रात-बेरात मुझे कुछ होने लगे तो गिलास भर पानी देने के लिए तो कोई चाहिए। दौड़कर तुम्हें खबर देनेवाला तो कोई घर में हो।''[5]

4.5 असफल विवाह

आज की नारी पढ़ी-लिखी होने के कारण वह अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता एवं अपने समान अधिकार के प्रति सजग है। आजकल विवाह केवल एक धार्मिक या सामाजिक कर्म न होकर स्त्री और पुरुष की अनिवार्य अवश्यकताओं की पूर्ति का एक साधन बनकर रह गया है। नारी आज पति को देवता स्वीकार करनेवाली नहीं रही और अपने व्यक्तित्व को विलिन करनेवाली भी नहीं रही, अपितु उसने अपने व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास किया है। वर्तमान युग में पति-पत्नी के संबंधों की पवित्रता नष्ट होती जा रही है। आजकल पति और पत्नी वैवाहिक जीवन में बंध तो जाते हैं पर कहीं-कहीं पति हिंसक पशु बन जाता है। इसके अलावा परिवार में ऐसी छोटी-मोटी अनेक घटनाएं घटती हैं कि जिससे पति-पत्नी में अनबन होती है इससे बचने के लिए ''जब हम अपनी बेटियों के जीवन में आदर्शों को उतारेगें और बेटों को महिलाओं का सम्मान करना सिखायेगें तब कहीं जाकर स्थिति धीरे-धीरे सुधरेगी।''[6] मालती जोशी की कहानियों में चित्रित असफल विवाह की समस्या निम्नलिखित रूप में चित्रित है -

4.5.1 अर्थाभाव

आज कल अस्पताल में भी मरीज की हैसियत देखकर उसके साथ व्यवहार किया जाता है। इसी कारण मध्यमवर्गीय औरतें डॉक्टर के पास जाने से हिचकिचाती हैं और इससे पति-पत्नी में अनबन की समस्या दिखाई देती है। 'पूजा के फूल' कहानी में चित्रित उमा बीमार होने के कारण उसे हमेशा डॉक्टर के पास जाना पड़ता है

लेकिन उमा को इसी बात का डर लगता है क्योंकि आजकल अस्पताल में सभी लोग मरीज की हैसियत से देखते हैं। वह और सुरेश पहली बार सायकल से अस्पताल गए थे तब उनकी तरफ किसी ने ध्यान भी नहीं दिया था और उमा को हर बार ऑटो से जाना उसकी बजट में नहीं बैठता। वह हमेशा अपने खर्चे और दवाइयों का हिसाब लगाती रहती है इसी कारण उसमें और सुरेश में हमेशा अनबन होती है। अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए उमा कहती है, ''बस यह सायकल ही सारा शो मार देती है। एक स्कूटर जरूरी हो गया है। पर हर बार कोई-न-कोई अप्रत्यक्षित खर्च सामने आ जाता है। पिछले छः महीनों से तो वह खुद ही बीमार चल रही है। पता नहीं कितना रुपया फूंक गया है, सुरेश तो कई बार गुस्से में आकर शीशियों के कागज फाड़ चुके हैं। कहते हैं, 'बस सबकी कीमत ही पढ़ती रहो तुम। तभी तो दवाइयां असर नहीं करती।' ''[7]

4.5.2 अत्याधिक सजगता

सफाई हमारे जीवन में आवश्यक होती है। पर इस सफाई की ओर जरूरत से जादा ध्यान देने पर वह समस्या बन जाती है। 'तौलिए' कहानी की कुमुद एक साधारण से घर में बड़ी हुई थी, शादी के बाद उसे सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध हो जाने पर उस पर साफ-सफाई का भूत सवार हो जाता है। उसके साफ-सफाई के कारण ही उसमें और उसके पति में अनबन दिखाई देती है। हमेशा उसके पति को उसकी वजह से पार्टियों में अपमानीत होना पड़ता है। यहां तक की सुशी को देखने आए हुए लोगों को विदा करने के बजाय कुमुद घर में ही रुक जाती है। मेहमानों में से एक औरत अपना भुला हुआ पर्स लेने के लिए वापस सुशी के साथ घर आती है तो वह वहां की स्थिति देख कहती है ''ड्राईंग रूम में पांव दिया और धक से रह गई मैं। वहां का तो नजारा ही बदला हुआ था। कालीन निकल चुका था कुर्सियां एक ओर सरका दी गई थी और गोपाल बाल्टी में पानी लेकर कमरे का पोछा लगा रहा था। सोपे के कवर निकाले जा चुके थे और एक कोने में खड़ी दीदी उन पर नए कवर्स चढ़ा रही थी। दीदी को देखा तो याद आया वो हमारे साथ बाहर नहीं आई थी। उन्होने दरवाजे से ही हाथ जोड़ लिए थे।''[8] इससे दोनों में झगड़ा होता है। किसी भी काम या आदत के प्रति अत्यधिक सजगता पारिवारिक विघटन का कारण बनती है।

4.5.3 तीसरे का प्रवेश

कभी-कभी पति-पत्नी के बीच किसी तीसरे आदमी के कारण दोनों में दरार निर्माण होती है और इससे पति-पत्नी में अनबन की समस्या निर्माण होती है। 'रिश्ते' कहानी में मालती जोशी ने पति-पत्नी के बीच में किसी तीसरे के आ जाने से किस प्रकार दोनों में अनबन निर्माण होती है इसका चित्रण किया है। महेश और मीरा के घर के पास ही मेहता अकेला रहता था। मीरा के घर में जब मेहता आता था तो मीरा का जी बहल जाता था

एक दिन जब मेहता कहने लगा कि रोज-रोज भाभी को तंग करने आ जाता हूं तो मीरा ने शिष्टाचारवश कह दिया था "नहीं भाई साहब आप आते हैं तो अच्छा लगता है थोड़ा मोनोटोनी ब्रेक हो जाता है। नहीं तो इस छोटी-सी जगह में तो दम घुटकर रह जाता है।"[9] इसी बात को लेकर महेश और मीरा में अनबन की समस्या दिखाई देती है।

4.5.4 भ्रमभंग

हर लड़की हमेशा अपनी शादी के सपने देखती है। शादी के बाद उसके सपने जब पूरे नहीं होते तो वहां स्वप्नपूर्ति के आभाव के कारण अनबन की समस्या निर्माण होती हुई दिखाई देती है। आलोच्य कहानी की विभा भी अनेक सपने अपने दिल में लिए अपने पति के घर आई थी, सुरेश की आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं थी कि उसके सपने सच हो सके। जब सुरेश और विभा सुरेश के बॉस के घर पार्टी में जाते हैं तब विभा की मुलाकात बॉस की बीवी रंजना से होती है। तो विभा गुस्से में कहती है, "बुरा तो लगता ही है। वह बौड़म बेवकूफ लड़की आज इतने बड़े आदमी की बीवी बन गई है। और हम ? अपनी किस्मत में तो जूते चटखाना ही लिखा है। ससुराल हो या पीहर कोई फर्क नहीं पड़ता।"[10] यह बात सुरेश को अपमानास्पद लगती है और इसी कारण सुरेश और विभा में अनबन होती है।

4.5.5 दूरी के कारण

जब पति नौकरी के कारण दूसरे शहर में रहता है और उसकी पत्नी उसके गांव के घर में रहती है। तब उसके पत्नी को पति पास न होने के कारण सास और ननंद सताती है और छुट्टियों में पति के आने पर सास और ननंद पति के कान भरती है और पति-पत्नी के बीच अनबन की समस्या पैदा होती है। 'ऊब' कहानी में चित्रित नरेश नौकरी के कारण दूसरे शहर में रहता है। पति के शहर में होने के कारण सुमन को सास और ननंद से परेशान होना पड़ता है। सारे घर के कामकाज की जिम्मेदारी सुमन पर होती है। जब कभी नरेश घर आता है तो मां और बहन के बहकावे में आकर नरेश सुमन से झगड़ा करता है। पहले जब नरेश की चिठ्ठी आती थी तो सुमन वह पढ़ने के लिए बेचैन होती थी। पर अब दोनों के बीच की अनबन के कारण नरेश की चिठ्ठी आती है तो सुमन के दिल में उसे पढ़ने की इच्छा भी नहीं होती "एक मन हुआ उठकर बत्ती जला ले, पर आलस आ गया सोचा, अब कल ही देखा जाएगा। और पत्र तकिए के नीचे रखकर वह सो गई।"[11]

इस प्रकार कहानीकार का मानना है कि शारीरिक दूरी से मानसिक दूरी भी निर्माण होती है और धीरे-धीरे पारिवारिक जीवन में तनाव बढ़ता है एवं प्रेम की कमी उत्पन्न होती है।

4.5.6 वैचारिक भिन्नता

कुछ परिवारों में पति और पत्नी की वैचारिक भिन्नता के कारण घर के किसी भी फैसले में उनका एकमत नहीं हो सकता इसी कारण दोनों में अनबन की समस्या निर्माण होती है। 'मोहभंग' कहानी में अकेलेपन के कारण गिरीश और सुनीता के बीच अनबन होती है। सुनीता ने अपनी दोनों बेटियों को बचपन में ही हॉस्टेल भेज दिया है। इसी कारण वह अकेली घर में शेरी नाम की कुतिया के साथ अपना समय बिताती है। गिरीश अपना सारा समय क्लब में बिताता है। सुनीता अपनी पढ़ाई का सही उपयोग याने गरीब बच्चों को पढ़ाने का अच्छा कार्य करती है। उनके अपने घर में उसे हमेशा तनावपूर्ण वातावरण सहना पड़ता है। गिरीश अपना क्षोभ व्यक्त करते हुए कहता है, ''घर में शांति बनाए रखने के लिए कई बार समझौते करने पड़ते हैं। यह भी उनमें से एक है, पर अभी भी मेरा मन इसका अभ्यस्त नहीं हो पाया है। हर बार जाते हुए लड़कियां इस तरह बिलखती हैं कि मेरी हफ्तों की नींद छीन जाती है। किसी तरह मैं वह दृश्य भूल नहीं पाता जितना ही अपने को सभांलता हूं, भीतर से उतनाही बिखर जाता हूं।''[12]

इस प्रकार पति-पत्नी में वैचारिक दूरी के कारण दोनों में अनबन की समस्या दिखाई देती है।

4.6 अनचाहे विवाह

भारतीय परिवार में परिवार का प्रधान ही परिवार का एकमात्र अधिकारी होता है। अतः विवाह के संबंध में संतान की इच्छा को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता युवक-युवतियां अपनी इच्छानुसार अपना जीवन साथी नहीं चुन सकते। उन्हें विवाह में निर्णय लेने का अधिकार नहीं होता, और उनके अधिकार की कोई पर्वाह भी नहीं करता। विवाह के संबंध में परिवार के कर्ता के निर्णय को मान्यता मिलने के कारण अनचाहे विवाह की समस्या निर्माण हो जाती है, क्योंकि जबरदस्ती थोपे विवाह के कारण पति-पत्नी में दरार निर्माण होती है।

4.6.1 तनाव, ईर्ष्या, प्रतिशोध

जब लड़का अपनी पसंद की लड़की से शादी करना चाहता है। उसके घरवालों को यह रिश्ता मंजूर न होने के कारण जब पिताजी बेटे को दबाव में लाकर उसकी जबरदस्ती किसी दूसरी लड़की से शादी करा देते हैं। तब निर्माण अनचाहे विवाह के कारण उन पति-पत्नी में तनाव, ईर्ष्या, प्रतिशोध की समस्या दिखाई देती है। 'प्रश्नों के भंवर' कहानी में मालती जोशी ने इसी समस्या को चित्रित किया है। इस कहानी में चित्रित अंजू और सुनील एक ही कॉलेज में होने के कारण एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। यह बात जानकर जब अंजू के घरवालें सुनील के घर शादी का प्रस्ताव लेकर जाते हैं तब सुनील के पिताजी जाति की अभेदयता के कारण उस प्रस्ताव

को ठुकरा देते हैं। तब सुनील भी अपने पिता के अज्ञानुसार दूसरी लड़की से शादी कर लेता है। जब यह बात अंजू को पता चलती है तो अंजू भी किसी और से शादी करके अपना घर बसा लेती है। लेकिन सुनील के दिल में अपनी पसंद की लड़की से शादी न होने के कारण दुःख - अक्रोश होता है। परिणामतः वह अपनी बीवी के साथ अच्छी तरह से पेश नहीं आता इसी कारण पति-पत्नी में दीवार सी बन जाती है। पति और ससुरालवालों के प्रेम के अभाव के कारण सुनील की पत्नी चिड़चिड़ी और असहिष्णु बन जाती है।

4.6.2 अपनेपन का अभाव

'एक शहादत एक फलसफा' शीर्षक कहानी में चित्रित अनिल और शकुन एक-दूसरे से प्यार करते थे। अचानक ही शकुन अपने घरवालों के दबाव में आकर दूसरे लड़के से शादी कर लेती है। शकुन के प्यार से वंचित दुःखी अनिल अपनी मां की मर्जी के अनुसार रजनी से शादी कर लेता है। पर अनिल के दिल में शकुन की यादें होने के कारण उसके और रजनी के बीच प्रेम, अपनापन, समर्पण न होकर ईर्ष्या, द्वेष, शत्रुता दिखाई देती है। अनिल का रजनी की ओर देखने का दृष्टिकोन, ''दरसल वह रजनी को पत्नी के रूप में नहीं, मां की बहू के रूप में ब्याह लाया था। और इसी तरह निभा भी रहा था। सबकुछ जैसे मात्र कर्तव्य हो।''[13]

इस प्रकार अनिल अपना प्यार न भूल पाने के कारण और मां के दबाव में आकर शादी करने के कारण अनचाहे विवाह की समस्या का शिकार है।

4.7 बुढ़ापा

आधुनिक युग में परिवार बहुत सीमित और छोटा हो रहा है। आज-कल परिवार में 'हम दो हमारे दो' तक संख्या सीमित रहने पर बल दिया जा रहा है। ऐसी स्थिति में यदी घर में वृद्ध लोग हो तो न ही बहू उनके साथ अच्छी तरह से पेश आती है न उनका अपना बेटा। जवानी में जो पति-पत्नी घर के प्रमुख होते हैं बुढ़ापे में वहीं घर के कोने में पड़े रहते है। जिंदगी भर पाई-पाई जमा करके जिस घर को वह जतन से सभांलते हैं बुढ़ापे में उसी घर में बहू के आ जाने से वह बिल्कुल पराए हो जाते हैं। उनके रिश्तें की ऊर्जा अर्थाभाव सोख लेता है।

4.7.1 मानसिक विवशता

आज कल कुछ परिवारों में बूढ़े लोग होने पर न उनकी बहू उनके साथ अच्छी तरह से पेश आती है, न उनका अपना बेटा। 'साथी' कहानी में चित्रित बूढ़े पति-पत्नी हैं उनके दोनों बेटे ऊंचे पद पर नौकरी करते हैं। कलेक्टर बेटे की पत्नी के सामने बूढ़ी सास को अपने पति को कुछ बनाकर खिलाने का अधिकार नहीं है। वे लोग अपनी बेटियों को भी मिलने नहीं बुला सकते क्योंकि उनके आ जाने से घर का खर्चा बढ़ता है। बहू और बच्चे

संकोच करते है इसलिए बाबूजी को हफ्ते में चार-पाच बार अपने कमरे में ही खाना खाना पड़ता है। घर के ऐसे वातावरण से तंग आकर मां एक दिन अपनी मुक्ति की कामना करती है तो, ''उनकी बंद आंखों के सामने असहाय एकाकी बाबूजी की मूर्ति नाच उठी और उन्हें लगा - बुलावा आ ही गया तो क्या वे निश्चिंत मन से जा सकेगी।''[14]

इस प्रकार मां जी को चिंता है कि उनके बाद बाबूजी की देखभाल करनेवाला इस घर में कोई भी नहीं है। घर के बूढ़े तन से घरवालों के साथ होते हैं मगर मन से कटे हुए अपनी बेबसी की दुनियां में खून के आंसू बहाते रहते हैं।

4.7.2 अकेलापन और अपनेपन का आभाव

कुछ परिवारों में बूढ़ों को अकेले अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है इसीलिए उनमें अपनेपन के आभाव की समस्या दिखाई देती है। 'अंतिम संक्षेप' इस कहानी में एक ऐसी बुढ़िया का चित्रण किया है जिसे दो-दो बेटे होने पर भी अकेले रहना पड़ता है। उसका एक बेटा विदेश में है, तो दूसरा अपनी बीवी की जिद की वजह से अलग रहता है। मनीष और महिमा में हमेशा अनबन होती रहती है और उससे छुटकारा पाने के लिए मनीष अपनी मां के पास आता है। इसी वजह से मां को बहू के ताने सुनने पड़ते हैं। जब यह सब बातें मां की बर्दास्त से बाहर होती हैं तो अंत में वह महिमा से कहती है, ''महिमा, तुम्हारा भगोड़ा कैदी मैं वापस भेज रही हूं। जो सजा देना चाहो दे देना। मैंने अपने दरवाजे बंद कर लिए हैं चाहो तो तुम भी कर लेना। मैं कुछ नहीं कहूंगी।''[15]

इस प्रकार मां जी बहू के कारण अपने बेटे का अपने घर आना बंद कर देती है। जिस आयु में बेटों से आधार-सुरक्षा पानी है उसी आयु में मां उसे आधार देती है।

4.7.3 अधिकार बोध

जब परिवार का प्रमुख अपने पद से रिटायर्ड होता है तब घरवालें उसे उतनी इज्जत नहीं देते जितनी की नौकरी के समय उसे मिलती थी। 'क्षरण' कहानी में सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या का चित्रण किया है। प्रधानाचार्या विमलजी अपनी सारी जिंदगी नौकरी में बिताने के बाद अपने बेटे के घर रहने आती है; लेकिन बेटे के परिवार में उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्हें दोपहर की चाय की आदत छोड़नी पड़ती है। उन्हें घर में अकेले रहना पड़ता है, नौकरों को कुछ देने का अधिकार भी उन्हें नहीं है। यहां तक की घर की एक पार्टी में अपनी आदत के अनुसार लोगों को मनुहार करके खिलाना भी उनकी बहू को अच्छा नहीं लगता। जब विमलजी अपनी बेटी के घर से आए संत्रों को अड़ोस-पड़ोस के घर में बांटती है तो बहू उनकी बेटी को फोन पर उनके बारे में शिकायत करती है। इस प्रकार आजतक अपनी मर्जी से जिनेवाली विमल जी को अपने बेटे और बहू के घर

में घुट-घुट कर जिना पड़ता है। वह निश्चय करती है ''इस बार वे रोएंगी नहीं इस बार भी अपनी पीड़ा का समुद्र चुपचाप पी जाएंगी। अपनी टूटन किसी पर जाहिर नहीं होने देंगी ये छोटे-छोटे दुःख उनके भीतर इसी तरह रिसते रहेंगें और उसके साथ ही क्षार होती रहेगी उनकी जिजीविषा।''[16]

इस प्रकार ढलती उम्र के साथ वह समझौता कर अपने अधिकार बोध की आहुति देती है उन्हें अपनी इच्छा वासना की बलि देनी पड़ती हैं।

4.7.4 प्रेम-स्नेह

कुछ परिवारों में बूढ़ों को अपने बेटों के द्वारा अपने जाने-पहचाने लोगों को मान-सम्मान मिले यह इच्छा रहती है पर कार्यरत होनेवालें बेटों के द्वारा प्रेम-स्नेह पाने की उनकी इच्छा अधूरी ही रह जाती है। 'मान-अपमान' कहानी में चित्रित मां का बेटा डिप्टी है। एक दिन उन्हें उनके बच्चों को संभालने वाली सहेली मिल जाती है। अल्लारक्खी ने उनके बेटे को ग्यारह साल तक संभाला था। मां अल्लारक्खी से मिलकर बहुत खुश होती है और उसे अपने घर ले आती है। घर में आने पर अल्लारक्खी की मुलाकात अपनी बहू से सहेली के रूप में कराती है। जब यह बात उनके बेटे को पता चलती है तो वह अपनी मां पर गुस्सा होता है, क्योंकि उन्होंने उसकी अमीर घर की पत्नी को एक नौकरानी के पैर छूने के लिए कहा। अपने बेटे की यह बात सुनकर वह तिलमिलाकर उठती है ''अरे वह पराए घर की लड़की, वह क्या अपमान तो तुम कर रहें हो तुम जो मेरे अपने जाएं हो।''[17]

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि बुढ़ापे में अपना बेटा अपना न रहकर सिर्फ अपनी पत्नी का रह जाता है। वह बड़प्पन के झूठे आदर्शों को महत्त्व देकर प्यार-स्नेह के रिश्तें को धन-पद के साथ तौलना चाहता है।

4.7.5 बोझ

आज कल पढ़े-लिखे पति-पत्नी को अपने बूढ़े मां-बाप जो देहात में रहते हैं वे बोझ लगने लगते हैं। 'अपने अपने दायरे' कहानी की शुरुआत योगेश के मां की मृत्यु के साथ होती है। योगेश शहर में रहता है उसकी बीवी शहर में पढ़ी-लिखी है। सास की मृत्यु के बाद उसे गांव आना ही पड़ता है लेकिन वह सिर्फ इसलिए गांव आती है कि सास के मरने पर उसके गहने ननंद ले न जाए। बप्पा पहले ही अपनी पत्नी की मृत्यु से परेशान थे उनके बेटे शहर में अच्छी नौकरी पर होने पर भी उन्हें अपनी पत्नी का अंतिम संस्कार उसी के गहने बेचकर करना पड़ता है। पत्नी के बाद अब बप्पा की जिम्मेदारी बेटे और बहू पर आ जाती है। बहू गांव के वातावरण से तंग आकर बप्पा को शहर ले जाने की बात करती है पर बप्पा इससे इंकार कर देते हैं तब पुष्पा अपने ससूर के बारे में सोचती है, ''क्या ये वहीं बप्पा है जो कल वैराग्य की बात कर रहे थे। अम्मां के मोह की हंसी उड़ा रहें थे और

पुष्पा सोच रहीं थी - मरने के बाद यदि इन्हें यही आना है तो जीते जी इनका भार कौन उठाएगा ?''[18]

इस प्रकार ढ़े मां-बाप जवान बेटों को बोझ कैसे लगते हैं इसका चित्रण इस कहानी में हुआ है। पीढ़ियों के अंतराल के कारण संबंधों में दरारे निर्माण हुई हैं।

4.7.6 मानसिक तनाव

'अनिकेत' कहानी में चित्रित अम्मां और बाबूजी अपने बेटे के पास रहते हैं। अम्मां जब प्यार से अपने बेटे के लिए खाने के लिए कुछ बनाती है तो बेटा खाने की तारीफ करने के बजाय यह काम नौकरों पर सौंपने के लिए कहता है। इस प्रकार हर छोटी-मोटी बात को लेकर अम्मां-बाबूजी को घुट-घुट कर जिना पड़ता है। वह अपने दूसरे बेटे के पास भी नहीं जा सकते क्योंकि उनका दूसरा बेटा और उसकी पत्नी दोनों भी नौकरी करते हैं और इनकी तरफ देखने के लिए किसी के पास समय ही नहीं है। जब बाबूजी अपनी बेटी से मिलने की इच्छा व्यक्त करते हैं तो यह उनकी छोटी सी इच्छा भी उनका बेटा पूरी नहीं करता। इस प्रकार अपनी और अपने पति की स्थिति देखकर अम्मां कहती है ''अब लगता है कि समय की आंधी ने उनका अपना घोंसला ही बिखेर दिया। एक तिनका भी उनका अपना न रहा।''[19]

बच्चों को बूढ़े, मां-बाप बोझ लगने लगते हैं। वे उनकी छोटी-छोटी इच्छाएं भी पूरी नहीं करते उनको बोझ समझकर उनसे छुटकारा पाने की कोशिश की जाती है।

4.8 बदलते रिश्तें

आज कल परिवार में निकटता प्रेम का ऱ्हास होता दिखाई देता है। वर्तमान युग में अर्थ ही प्रमुख है। अर्थ ही मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान ले रहा है परिवार में 'अर्थ', 'प्रेम' पर हावी हो रहा है। अर्थाभाव की स्थिति में मां की ममता धुंधली पड़ गई है। पिता अपना कर्तव्य बोध भूल रहे हैं। परिवार में शिक्षित अर्थाजन करने वाली युवती लड़के का स्थान लेकर परिवार का भरण-पोषण करनेवाला उपकरण मात्र बनकर रह गई है। माता-पिता की उपयोगितावाली वृत्ति के कारण प्रेम की कोमल भावनाएं खंड़-खंड़ में बंट गई है। केवल नाम के रिश्तें रह गए हैं। इस बदलतें परिवेश में परंपरागत मूल्य टूटकर नए मूल्य स्थापित हो रहे हैं। एक समय था जब पुत्री की कमाई को स्वीकार करना माता-पिता के लिए लांछनास्पद था पर अब पुत्री को ही अर्थ का स्त्रोत मानकर उसके विवाह को जान-बुझकर टाला जा रहा है। अंतः पिता-पुत्री, माता-पुत्री, भाई-बहन जैसे रिश्तों में दूरियां पैदा हो गई हैं।

4.8.1 जिम्मेदारी

कुछ परिवारों में बहू के आ जाने से बेटे का परिवारवालों से रिश्ता बदल जाता है। वह परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारियां भूल जाता है और सिर्फ अपने बारे में सोचता है इससे बदलते रिश्तों की समस्या सामने आती है। 'सन्नाटा ह सन्नाटा' कहानी की सावित्री का बेटा दिल्ली से छुट्टियां बिताने के लिए अपने परिवार के साथ अपने पैतृक घर आ जाता है। सावित्री अपने बेटे और पोतों से मिल भी नहीं लेती तभी बेटे को फौज में बुलाया जाता है। सावित्री दिल पर पत्थर रखकर बेटे को जाने की अनुमति देती है। बहू घर के काम से छुटकारा पाने हेतु पति के साथ जाने की जिद करती है। सावित्री अपने घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अपने छोटे बेटे और बेटी को बड़े भाई के यहां दिल्ली घूमने के लिए भेजना चाहती है पर उनका बड़ा बेटा नरेंद्र इस काम के लिए आनाकानी करता है। इस प्रकार अपने बेटे और बहू का बर्ताव देखकर सावित्री कठोर होकर उन्हें विदा कर देती है। ''पगली सुनीता बबलू और गुडीया को चिपटकर जोर-जोर से रो रही थी पर उसने छाती में उठते हुक को दबाकर दोनों को एक बार चूमा और फिर... बेकार मोह बढ़ाने से क्या फायदा !''[20]

4.8.2 भाभी का आतंक

कभी कभी लड़की बड़ी होने के कारण सारे घर की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है। अपनी शादी का खयाल दिल से निकालकर अपने छोटे भाई की शादी करती है। बहू के रूप में जो औरत घर में आती है उसके कारण भाई और बहन में बदलते रिश्तें की समस्या निर्माण हुई दिखाई देती है। 'हमको दियो परदेस' कहानी की कुसुम अपने भाई और बीमार पिताजी की जिम्मेदारी के कारण 18 वर्ष की आयु से नौकरी कर अपने परिवार का भार उठाती है। कुसुम इन दोनों की देखभाल के कारण अपनी तय हुई शादी से इंकार कर देती है। जिम्मेंदारियां उठाते-उठाते उसकी शादी की उम्र ढल जाती है। तो वह अपने भाई रघु की शादी कर देती है। जो बहू घर में आती है उसके कारण परिवार में तनाव निर्माण होने लगता है। जिस कुसुम ने अपने हाथों से जिस घर और भाई को संभाला था उस पर उसका थोड़ा भी अधिकार नहीं होता घर की यह स्थिति देखकर वह एक विधुर के साथ शादी कर लेती है। एक दिन वह अपने भाई से मिलने आती है तो भाई के मुंह से ''वाह दीदी ! इधर कैसे भूल पड़ी आज ! इस घर में तो तुम्हारा रिश्ता उन्हीं तक था जो तुम्हें थैली भर-भर कर देते थे। वे चले गए तो सारे संबंध समाप्त हो गए।''[21]

इस प्रकार कुसुम और उसके भाई के बीच भाभी के आतंक के कारण बदलते रिश्तें की निर्माण हुई समस्या दिखाई देती है।

4.8.3 हादसा या संकट

परिवार में कभी-कभी अचानक कोई हादसा होता है जिससे पारिवारिक रिश्तें में दूरियां निर्माण होती हैं। 'आवारा बादल' कहानी के गोविंद और उसकी सौतेली मां के बीच बनी दीवार का चित्रण किया गया है। गोविंद जब छोटा था तो उसकी मां की मृत्यु के बाद उसके घर में ये नई मां आई थी। तब वह हर वक्त अपनी सौतेली मां के साथ घूमता रहता था। नई मां उसे अच्छी आदतें सिखाती थी। यह बात उसकी दादी को नहीं भाती थी। एक दिन गोविंद के मुंह से गाली सुनकर मां उसे चाटा मारती है तो दादी और अड़ोस-पड़ोस की सभी औरतें नई मां को कोसती हैं। तो मां अपना ध्यान गोविंद से हटा लेती है। परिणामतः गोविंद मां से दूर बहूत दूर जाता है। गोविंद पढ़ाई-लिखाई में कमजोर होने के कारण वह उन्नीस साल का होने पर भी मॅट्रिक पास नहीं कर पाया। पर जब उसकी बुआ उस पर चोरी का इलजाम लगाती है तो, वह घर से भाग जाता है क्योंकि इस सब के बाद उसे अपनी मां को मुंह दिखाने में शर्म आती है। पर जब उसे लेने आए पड़ोस के लोगों से गोविंद को पता चलता है कि मां उसका पक्ष लेकर बुआ के साथ लड़ी है तो वह सोचता है, ''मां उसके लिए रोई है, सच ? उसके लिए लड़ी है, सच ? खुशी से उसका मन नाम उठा। अब वह निश्चित होकर घर लौट सकेगा। लोग उपहास करेगें उसे डर नहीं है अब वह जमाने भर के ताने - उलाहने सह सकता है।''[22]

4.8.4 पीढ़ियों का अंतराल

कुछ लड़कियां शादी के बाद अपने ही खयालों में खोई रहती हैं और अपना समय वह सिर्फ अपनी हम उम्र सहेलियों के साथ ही गुजारना चाहती है। पुरानी पीढ़ी की मां के साथ समय बिताने के लिए उसके पास वक्त ही नहीं है। 'मेहमान' कहानी के द्वारा मालती जोशी ने किस प्रकार बेटी की शादी होने के बाद बेटी अपनी मां से दूर चली जाती है इसका चित्रण किया है। आलोच्य कहानी में बूढ़ी मां का चित्रण किया है जिसकी बेटी लगभग दो साल के बाद सिर्फ एक महीने के लिए अपनी मां के पास मयाके आई है। मायके आने पर भी अपनी मां के साथ समय बिताने के बजाए बेटी हमेशा अपनी सहेलियों और भाभी के साथ ही खोई रहती है। मां ने ऐसी अनेक बातें सोच रखी है जो वह सिर्फ अपनी बेटी से कहना चाहती है। अपनी मां की तरफ देखने के लिए बेटी के पास समय ही नहीं है। आखिर एक महीने के बाद बेटी चली जाती है और मां को अपनी दिल की बातों को दिल में ही रखना पड़ता है। बेटी के चले जाने पर मां को ऐसा लगता है। ''पूरे घर में एक सन्नाटा-सा खींच आया था। महीने भर जैसे एक उत्सव चल रहा था, जो अब समाप्त हो गया था। एक त्यौहार था जो अब बीत गया था।''[23]

4.8.5 प्रतिष्ठा के खोखले मानदंड़

जब बेटा पढ़-लिख कर बड़ा आदमी बन जाता है तो वह उसके जैसी पढ़ी-लिखी और अमीर घर की लड़की से शादी करता है। जब वह अपने गांव आता है तो अपनी अमीर बीवी के सामने उसे अपने घरवाले साधारण से लगने लगते हैं उसकी झूठी प्रतिष्ठा और खोखले मानदंड के कारण ही बदलते रिश्तों की समस्या दिखाई देती है। 'प्रतिष्ठा' कहानी के द्वारा बहू के आ जाने से बेटे का अपने परिवारवालों से रिश्ता किस प्रकार बदल जाता है इसका चित्रण किया है। इसमें एक साधारण से घर में बेटे की मर्जी के अनुसार एक पढ़ी-लिखी अमीर घर की बहू आने पर बेटा अपने पुराने घर में रहने के बजाय अपनी पत्नी को लेकर किराए के नए मकान में रहना पसंद करता है। मां ने अपनी हैसियत के अनुसार दिए-गए दो सौ रुपए में अपनी पत्नी को साड़ी खरीदने में उसे शर्म आती है। यहां तक की अपने बाबूजी का दूसरों के घर पूजा करने जाना भी बेटे को अच्छा नहीं लगता।

4.9 ***अर्थाभाव***

हमारे समाज में सदैव 'अर्थ' ने मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। व्यक्ति के जीवन से अगर अर्थ निकाल दिया जाए तो उसका जीवन निरर्थक हो जाएगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि समाज और व्यक्ति के कार्यकलाप अर्थ के सहारे ही चलते हैं।

पारिवारिक जीवन के स्तर पर अर्थ ही व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधों की नींव है। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होने से सामाजिक संबंधों में परिवर्तन आवश्यक होता है। आज आर्थिक समस्याओं के कारण परिवारजनों के रिश्तों में दरारे पड़ रही हैं। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अनेक परिवारों को अपनी इच्छाओं, आकाक्षांओं को दबाना पड़ता है। ऐसे परिवार अपनी छोटी-छोटी अवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकते उन्हें हमेशा दूसरों पर अवलंबित रहना पड़ता है। ''आज के पूंजीवादी युग में रुपया है तो सब कुछ है और रुपया इंसान को सबकुछ सीखा देता है।''[24] इसके अभाव में रिश्तें-नातों की मानो ऊर्जा खत्म होती है। पाारिवारिक जीवन की शांति-चैन अर्थ पर टिकी हुई होती है।

4.9.1 शोषण

अर्थ की कमी के कारण पारिवारिक रिश्तों में शोषण की समस्या दिखाई देती है। 'औकात' कहानी के द्वारा मालती जोशी ने आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर रिश्तेंदारों में मीनू को किस प्रकार अपमानीत होना पड़ता है इसका चित्रण किया है। मीनू गरीब परिवार की एक साधारण-सी लड़की है। वह अपनी मौसी की बेटी की शादी में मौसी की मदद करने आ जाती है। अमीर मौसी उसकी मजबूरी का बहुत फायदा उठाती है। जब

उसके बराबर की बहनें पिकनिक पर जाती है तो मौसी मीनू को घर के कामों में लगा देती है। गरीब मीनू दिनभर खटती रहती है और बाकी लोग मजे करते हैं। नीता की शादी में मीनू जब अपनी सहेलियों की जिद के कारण सज-संवर घूमती है तो उसे देखकर उसके लिए एक रिश्ता आ जाता है जब यह बात मौसी को पता चलती है तो वह मीनू की गरीबी पर व्यंग्य करती है। मौसी की बातें सुनकर मीनू को ऐसा लगता है जैसे ''इंद्रधनुषी बादलों में उड़ता हुआ मीनू का मन दन्न से जमीन पर आ गिरा। वह एकदम होश में आ गई, मौसी ठीक ही तो कह रही है। नीता के ससूर बेचारे कैसे जानेगें कि सामने जो सजी-सवरी लड़की खड़ी है उसका सारा शृंगार उधार का है चंदे का है।''[25]

इस प्रकार अर्थाभाव के कारण उसके सारे सपने टूट जाते हैं। उसे अपमान, दुःख का सामना करना पड़ता है।

4.9.2 अर्थ की जकड़न

'शुभकामना' कहानी के द्वारा मालती जोशी ने अर्थ की जकड़न में फंसे परिवार का चित्रण किया है। सदानंद इंजीनियर है पर उसमें गलत ढंग से पैसे कमाने की होशियारी न होने के कारण उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इसी कारण गौरी को हमेशा अपनी अमीर बहनें, मां और सहेलियों के तानों का शिकार होना पड़ता है। उसकी मां उसे पत्र भेजकर सूचित करती है कि हमने भी तुम्हारी शादी इंजीनियर के साथ कराई थी पर तेरे पास तो कुछ भी नहीं है। गौरी को मेहमानों को भी अपने घर बुलाने में शर्म लगती है क्योंकि उसके घर में फ्रिज और टी. वी. नहीं है, मेहमानों को घूमाने के लिए वह किसी गाड़ी का भी इंतजाम नहीं कर सकते पर अंत में सदानंद मंत्री जी की अज्ञा से गलत ढंग सेअपनी तरक्की करा लेता है और गौरी से कहता है, ''पर सोचा चलो इसी बहाने तुम लोग कुछ दिन सत्ता का स्वाद चख लोगे। खासकर तुम ! तुम अपनों के बीच सर उठाकर चल सकोगी मेरी फटीचर जिंदगी के कारण तुम लोगों को कैसी शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है क्या मैं जानता नहीं ?''[26] इस प्रकार आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण सदानंद को गलत तरीके से काम करना पड़ता है। कहानीकार स्पष्ट करती है कि सम्मान-प्रतिष्ठा पाने के लिए अधिक धन पाना आवश्यक होता है और आज की दिखावे की दुनिया में अपनी ईमानदारी, तत्वनिष्ठा बेचकर मनुष्य किस तरह पथभ्रष्ट हो रहा है।

4.9.3 सम्मान-प्रतिष्ठा

कुछ लोग कभी-कभी अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर भी सम्मान और प्रतिष्ठा पाने के लिए अमीरी का ढोंग करते हैं। 'उधार की हंसी' इस कहानी में चित्रित अर्थाभाव से पीड़ित मध्यमवर्गीय परिवार जो

अपने को उच्चवर्गीय दिखाने की कोशिश करता है इसका व्यंग्यात्मक चित्रण आलोच्य कहानी के द्वारा हुआ है। इस कहानी में चित्रित बेटे के जन्मदिन पर उसे अच्छे कपड़े न मिलने पर वह बाप से झगड़ा करता है। बेटे की छोटी-सी इच्छा पूरी न कर पाने के कारण मां दुःखी होकर उसे कपड़े खरीदने जब बाजार जाती है तो बस में उसे मिसरानी चाची का राजु दिखाई देता है। मिसरानी चाची जिस मालिक के घर काम करती थी वह उसके बेटे के लिए पुराने कपड़े देते थे। पर वह कपड़े राजु को पहनना अच्छा नहीं लगता था। उन्हीं कपड़ों में अपने आप को सुखी दिखाते हुए राजु को देखकर वह अपने पास बैठी औरत से कहती है, ''हंसने दो बहन', उसने मृदुता से कहां अपना क्या लेते हैं। वक्त का यही छोटा-सा टुकड़ा उनका अपना है फिर तो वहीं हाय-हाय करनी है। महंगाई के मार ने हम लोगों की हंसी तो छीन ली हैं इन्हें तो मौजा करने दो क्या पता यह उनकी अपनी हंसी भी अपनी है या उधार की ?''[27] सामाजिक प्रतिष्ठा-सम्मान पाना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है इसकी पूर्ति के लिए वह सही-गलत, जायज-नाजायज सभी तरीकों को अपनाता है। जब उसे सफलता नहीं मिलती तब वह दिखावा कर आत्मसंतुष्टि पाना चाहता है। वह झूठा रोब दिखाकर तथा सुखी-आनंदी होने का बहाना कर तुष्टि पाना चाहता है। आलोच्य कहानी इसी स्थिति एवं मानसिकता को उद्घटित करती है।

अपने बच्चों को खुश देखना मां-बाप का सपना-कोशिश होती है लेकिन अर्थाभाव के कारण उनका सपना कोशिश पूरा नहीं होती तब वे औरों के बच्चों को खुश देखकर खुश होने की कोशिश करते हैं।

4.9.4 विवाह

अर्थ की कमी के कारण अविवाहित लड़कियों के विवाह की समस्या निर्माण हुई दिखाई देती है। 'विकल्प' कहानी में अर्थाभाव के कारण अपनी बेटियों की शादी करने में असमर्थ पिता का चित्रण आया है। बबली के घर की आर्थिक पिता का चित्रण किया है। बबली के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और इसी अर्थाभाव के कारण उसके घर में दो बड़ी बहनें अविवाहित हैं। पिता की दहेज देने की काबिलियत न होने के कारण बड़ी बेटी की शादी में विलंब हुआ दिखाई देता है। घर में हर वक्त बड़ी बहन की शादी की चिंता दिखाई देती है। फर्स्ट इअर में पढ़ रही बबली भी अब शादी की उम्र की हुई है इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। पर बबली सोचती है, ''लोग-बाग तो शायद उसे जिंदगी भर बबली ही समझते रहेगें उन्हें कौन जाकर समझाएगा कि वह भी अब सपने देखने लगी है उन सपनों में अनजाने देश का कोई राजकुमार आकर उसे तंग करने लगा है।''[28]

इस प्रकार अर्थाभाव के कारण मां-बाप अपनी बेटियों की ठीक समय पर शादियां नहीं कर पाते। बच्चों की बढ़ती उम्र की ओर उन्हें अनदेखा करना पड़ता है तब बच्चों के मन में अपराध बोध निर्माण होता है। बच्चों

के सपनों की दुनिया नष्ट होती है।

अर्थाभाव के कारण बेटी का विवाह मां-बाप के लिए संकट है। इस संकट से छुटकारा पाने के लिए मां-बाप अपनी फूल-सी कोमल बेटी को किसी भी अपात्र के गले में बांधकर चैन की सांस लेते हैं।

आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण कुछ लोगों को विवशता-लाचारी का शिकार होना पड़ता है। 'बोझ' कहानी मे चित्रित लड़की अर्थाभाव के कारण अपने मां-बाप के लिए बोझ लगने लगती है। आलोच्य कहानी में चित्रित परिवार की स्थिति अच्छी न होने के कारण 24 वर्षीय नीरू की शादी उनके सामने समस्या के रूप में निर्माण होती है। नीरू की बड़ी बहन की मौत के कारण उसके दो बच्चों की जिम्मेदारी भी नीरू के परिवारवालों पर पड़ती है। जब नीरू और उसके पिताजी बच्चों को उनके घर छोड़ने जाते हैं तब उसके बहन की सास नीरू का हाथ अपने बेटे के लिए मांगती है, नीरू के पिताजी इस रिश्तें से इंकार कर देते हैं। वह कहती है "गालियां तो अब भी देती हूं पर कम-से-कम एक लड़की तो सुभीते से पार हो जाती।"[29] यह बात सुनकर नीरू को बहुतबुरा लगता है और वह रोने लगती है।

इस प्रकार आलोच्य कहानी के द्वारा लेखिका ने स्पष्ट किया है कि धनाभाव के कारण मां-बाप अपनी फूल-सी कोमल बेटी को किसी भी अपात्र के गले में बांधने को विवश हो जाते हैं।

4.9.5 विवशता-लाचारी

'सन्नाटा ही सन्नाटा' शीर्षक कहानी में सावित्री को अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण विवशता और लाचारी का सामना करना पड़ता है। सावित्री के परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। उसका एक बेटा फौज में होने के कारण बंधाई रकम ही भेजता है। अपनी स्थिति के कारण सावित्री के छोटे बच्चों को कहीं भी जाने के लिए नहीं मिलता वह अपने बच्चों को अपने बड़े भाई के यहां दिल्ली भेजना चाहती है। पर नरेश इसके लिए तैयार नहीं होता है। जब नरेश की बीवी अपने गांव में अपने सास-ससूर के पास न रहकर उन्हें और जादा पैसे भेजने की बात करती है तो सावित्री यह बात सुनकर यह बात सुनकर पैसे न लेने की बात कहना चाहती है पर फिर सोचती है कि "मुंह उठाकर इतनी बड़ी बात कह देना क्या इतना आसान है। आसान हा अगर कल को नरेश पैसे भेजना बंद कर दे तो कितनी ही चीजे अधर में लटकी रह जाएंगी। राकेश की ट्यूशन, महेश के जूते, मुनीश का स्वेटर, सुनीता की साड़ी, बाबूजी का दूध, उसकी अपनी दवाइयां कितनी जरूरतें है जो उस मनिऑर्डर से लिपटी रहती है। इस कड़वे सच को कैसे नकार दें।"[30]

इस प्रकार अर्थाभाव के कारण सावित्री को अपने बेटे और बहू की बातों को लाचारी से सहना पड़ता है।

4.9.6 परवरिश

अर्थाभाव के कारण बच्चों की परवरिश मां-बाप के लिए संकट होता है। बच्चों की साधारण-सी साधारण अवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ, बेबस, लाचार मां-बाप अपने बच्चों का भविष्य बने इसलिए उन्हें गोद देना बुरा नहीं मानते। 'कोख का दर्प' कहानी में चित्रित परिवार इस स्थिति का शिकार है। कुम्मी के परिवार में पांच भाई-बहन थे; पिताजी की जिद के कारण किशोर को उसकी अमीर बुआ गोद लेती है। फिर यह सारा परिवार बुआ के सहारे ही अपना गुजारा करता है लेकिन बुआ हमेशा इन्हें मन-ही-मन कोसती रहती है। लेकिन कुम्मी के बचपन से लेकर आज तक जब वह दो बच्चों की मां है उस परिवार की आर्थिक स्थिति वैसी ही है। बेटों की बेटियों की शादी हो गई हैं पर उसकी मां का घर हमेशा अर्थाभाव से पीड़ित दिखाई देता है। आज भी जब कुम्मी अपने मायके की हालत देखकर कहती है, "कभी-कभार घर जाती हूं तो जीर्ण-शीर्ण गृहस्थी को देखकर मन तड़प उठता है तीन-तीन बेटों की मां अकेली असहाय खट रही है। बाबूजी की आंखें जवाब देती जा रही हैं वे पेंशन पा गए हैं और दिन भर घर में बैठें चिड़चिड़ाते रहते हैं। घर हर तरफ से झूल रहा है। लगता है किसी भी दिन बैठ जाएगा।"[31]

4.10 ***तलाक***

परिवार में जिस प्रकार नारी की एक कर्तव्य सीमा निश्चित की जाती है। उसी प्रकार पुरुष को भी एकपत्नीव्रत और आदर्श पुरुष बनने का निर्देश दिया गया है। वस्तुतः पारिवारिक जीवन सुचारू रूप से तभी चल सकता है जब पति और पत्नी दोनों में परस्पर सहयोग, परंपराओं का आदर, प्रेम, मिलजुलकर रहने की भावना आदि बातों को ध्यान में रखकर जीवनयापन करते है, लेकिन कभी-कभी दांपत्य जीवन में किसी-न-किसी वजह से तनाव बढ़ जाता है और जब वह बात बहुत आगे बढ़ जाती है तो दोनों साथ-साथ जीवन व्यतीत नहीं कर सकते तो एक-दूसरे से मुक्ति पाने के लिए उन्हें तलाक का सहारा लेना पड़ता है। हमारे भारतीय संविधान में तलाक की स्वीकृति दी है अगर पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग होना चाहते हैं तो कानूनी तौर पर उन्हें अलग किया जाता है।

तलाक की वजह से परिवारिक जीवन टूट सकता है। तलाक के कारण परिवार में अनेक समस्याएं निर्माण होती हैं, और उन्हीं समस्याओं को मालती जोशी ने अपनी कहानियों में चित्रित किया है। जैसे -

4.10.1 कुरूपता

जब किसी लड़के को अपने घरवालों की मर्जी के अनुसार शादी करनी पड़ती है। शादी के बाद जब वह

अपनी पत्नी को देखता है तो उसकी कुरूपता के कारण वह नाराज हो जाता है। इसी कारण उन दोनों के बीच की दूरी बढ़ जाती है और उसका अंत तलाक से होता है। 'अक्षम्य' कहानी के शाम की शादी तब होती है जब वह सेकंड-इअर में पढ़ रहा था। उसके मन में अपनी होनेवाली पत्नी के बारे में अनेक अरमान थे, पर बिंदू दिखने में सधारण-सी होने के कारण शाम नाराज हो जाता है। इस प्रकार अप्रिय वातावरण में उनका दांपत्य जीवन शुरू होता है। शाम जब भी घर आता उसकी मां हमेशा बहू के बारे में शिकायत करती तो शाम अपना सारा अक्रोश बेचारी बिंदू पर उतारता। एक दिन तो मां ने उसे कहा की बहू का रज्जू हलवाहे के साथ चक्कर चल रहा है। शाम यह बात सुनकर बिंदू पर टूट पड़ता है, तो बिंदू यह अन्याय न सहकर कहती है, ''जानती हूं, तुम्हारी मां ने अपना अनाचार ढंकने के लिए मुझ पर यह तोहमत लगाई है। मेरे यहां रहने से उनकी आजादी में खलल पड़ता है न!''[32] यह बात सुनकर शाम उसे इतना मारता है कि वह अधमरी-सी हो जाती है। बिंदू की यह हालत देखकर उसके मायकेवाले तलाक का मुकदमा दायर कर देते हैं और दोनों में तलाक हो जाता है।

इस प्रकार पत्नी दिखने में कुरुप होने के कारण पति-पत्नी में तनाव बढ़ जाता है और जब यह बात बहुत आगे बढ़ जाती है तो उन्हें तलाक का सहारा लेना पड़ता है।

4.10.2 तलाकशुदा बहन की जिम्मेदारी

कुछ परिवारों में आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण और ऊपर से तलाकशुदा बहन की जिम्मेदारी आ जाने से समस्या निर्माण होती है। 'मान-अपमान' कहानी की अल्लारक्खी को उसका पति तलाक दे देता है तो वह अपने मायके भाई के पास चली आती है। भाई के घर में पहले ही बहुत लोग हैं और एक आ जाने से उसकी बीवी दिनभर उसकी बहन को कोसती रहती है। इससे परेशान होकर भाई डॉक्टर से कहकर, डॉक्टर साहब के घर में अपनी बहन को आया का काम दिलवा देता है। इस प्रकार अल्लारक्खी का जी भी बहल जाता है और भाभी घर में कुछ पैसे आने के कारण चुप हो जाती है। अल्लारक्खी थोड़े ही दिनों में डॉक्टर साहब के घर में घुल-मिल जाती है। मुन्ने की तो वह अपनी जान से जादा फिकर करती है। इस तरह से इतने बड़े दुःख के बाद अपनी बहन को खुश देखकर करीम डॉक्टर साहब से कहता है, ''हुजूर का इकबाल बुलंद हो। आपने उस दुखियारि की गोद में अपना बच्चा डालकर उसकी जिंदगी बना दी।''[33]

इस प्रकार कहानीकार तलाकशुदा औरत को सम्मान देने के लिए आर्थिक स्वावलंबन आवश्यक मानती हैं।

4.11 अकेलापन एवं घुटन

मनुष्य जन्म से ही पारिवारिक वातावरण में पलकर बड़ा होता है। उसे हमेशा जीने के लिए परिवारजनों

की सहायता लेनी पड़ती है। लेकिन कभी-कभी ऐसी परस्थितियां निर्माण होती हैं कि मनुष्य परिवार में रहते हुए तथा अपने सगे-संबंधियों के होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण अकेलापन महसूस करता है। परस्थितियों के दबाव के कारण उसे घुटन और अकेलेपन की समस्या का सामना करना पड़ता है। इस समस्या को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि ''पारिवारिक माहौल में कभी-कभी ऐसी घुटन बस जाती है जो आदमी का खुलकर सांस लेना भी मुश्किल कर देती है।''[34]

4.11.1 वैचारिक भिन्नता

नौकरी करनेवाले पति-पत्नी आर्थिक स्वावलंबन के कारण अपने स्वत्व की रक्षा करने के प्रति अत्याधिक सजग होते हैं परिणामस्वरूप पति-पत्नी में तनाव की स्थिति निर्माण होती है। बढ़ते तनाव के कारण पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग रहने की तथा मानसिक स्तर पर दूर रहने की कोशिश करते हैं। 'सन्नाटा' कहानी के द्वारा मालती जोशी ने पति-पत्नी के द्वारा उपस्थित तनाव के कारण निर्मित अकेलेपन एवं घुटन की समस्या का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी की उत्तरा कॉलेज में पढ़ाती है। उसकी बड़ी बेटी निशी की शादी हो गई है। निशी की शादी के बाद से उत्तरा अपने आप को अकेली महसूस करती है, क्योंकि उसकी छोटी बेटी अशु हरदम अपने पापा के साथ होती है। पापा बीमार होने के कारण अशु उन्हें छोड़कर कहीं जाना भी नहीं चाहती। उसके पापा को हमेशा सहारे की अवश्यकता होने के कारण वह अशु को कहीं जाने नहीं देते। यहां तक की जब उत्तरा के कॉलेज में उसीका बहुत बड़ा सम्मान-समारोह आयोजित होने पर भी घर से कोई उस समारोह के लिए नहीं आता। अशु अपने पापा के कारण और पापा अपनी पत्नी का सम्मान न देख पाने के कारण नहीं आते यहां तक की उसे दरवाजे तक भी कोई गुड़लक करने नहीं आता; इस प्रकार उत्तरा अपने आप से सोचने लगती है, ''अकेलापन क्या इतना भयानक होता है ? आखिर उत्तरा भी जी रही है। वह तो बरसों से भीड़ के बीच का अकेलापन झेल रही है।''[35]

इस प्रकार सुख-दुःख में साथ देने का वादा करनेवाले पति-पत्नी अपने अहं की तुष्टि के लिए जब अत्याधिक सजग होते हैं तब पति-पत्नी का रिश्ता बेगाना होता है।

4.11.2 गलतफहमी

पारिवारिक रिश्तों में उपस्थित गलतफहमी के कारण भी अकेलापन एवं घुटन को झेलना पड़ता है। 'आवारा बादल' शीर्षक कहानी के द्वारा कंहानीकार ने गोविंद के भरे-पूरे परिवार का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी का गोविंद अपने आपको अकेला महसूस करता है। उसके बचपन में उसकी सौतेली मां के साथ एक

हादसा हो जाने के कारण मां उस पर अपना अधिकार नहीं जमाती दादी के लाड़-प्यार के कारण वह बहुत बिगड़ जाता है। इसी कारण पिताजी भी उसकी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देते। दादी की मृत्यु के बाद वह बिल्कुल अकेला हो जाता है। वह उस घर में हमेशा अपने आपको अकेला महसूस करता है। अपने अंदर की हर बात को छुपाकर रखता है। जब वह बुआ के द्वारा अपमानीत होकर घर छोड़कर जाता है, उसे पड़ोस के लोग लेने आते है तब उसे इस बात का पता चलता है कि उसकी सौतेली मां उसकी तरफ से बुआ के साथ लड़ पड़ी है। ''मां उसके लिए रोई है, सच ? उसके लिए लड़ी है, सच ? खुशी से उसका मन नाच उठा। अब निश्चिंत होकर घर लौट सकेगा। लोग उपहास करेगें उसे डर नहीं। हिकारत से देखेगें उसे परवाह नहीं है। अब वह जमाने भर के ताने उलाहने सुन सकता है। मुंह छुपाने भर की जगह उसे मिल गई है।''[36]

गोविंद के मन से अपनी मां के बारे में निर्मित सभी गलतफहमियां दूर हो जाती हैं। वह अकेलेपन की भावना से मुक्त होता है। अकेलेपन की भावना के कारण मनुष्य दुःखी, निराश बनता है। इससे छुटकारा पाने के लिए गलतफहमियों को दूर रखना चाहिए।

4.11.3 रिश्तों का टूटना

गोद लेने के कारण जब पहलेवाले रिश्तें दूर हो जाते हैं तो परिवार में घुटन की समस्या उत्पन्न होती है। 'कोख का दर्प' कहानी में कुम्मी के परिवार का चित्रण आया है। कुम्मी के पांच - भाई-बहन थे। उसकी बुआ उनमें से एक को याने किशोर को गोद लेती है और उसके बाबूजी उसे उसकी मां की मर्जी के खिलाफ अमीर घर में अच्छी परवरिश हो इस हेतु से बेटा गोद देते हैं। पर मां के जिगर का टूकड़ा बिछड़ जाने के कारण वह हमेशा घुट-घुट कर जीती है वह अपने मन की बात किसी को बता नहीं सकती पर उसकी बेटियां उसकी घुटन को जरूर समझती थी।

उसी तरह गोद गया हुआ किशु भी उस अमीर एवं सब सुविधायों से युक्त परिवार में अपने आपको अकेला महसूस करता है। उस आठ साल के बच्चें को यह सब कुछ झेलना कठिन होता है और वह अपने आपको अकला समझकर घुटन महसूस करता है। कभी-कभार अपने भाइयों से मिलकर भी वह अपने दिल की बात प्रकट नहीं कर सकता। लेकिन एक दिन अपनी बहन के सामने अपनी घुटन व्यक्त करते हुए ह कहता है, ''एक सात-आठ साल के बच्चें के लिए बंगला-मोटर नौकर-चाकर कोई अर्थ नहीं रखते। उसे मां की आश्वस्त गोद चाहिए, अपने घर की सुरक्षित चारदीवारी चाहिए इस के बिना जो बचपन बितता है, वह कितना यातना देता है तुम क्या जानों।''[37]

छोटे बच्चें मां-बाप की छत्र-छाया में सुरक्षा अनुभव करते हैं। किसी कारणवश इस छत्र-छाया से उन्हें

वंचित रहना पड़ता है तब वे अकेलापन, असुरक्षा अनुभव करते हैं। सुरक्षित एवं मां-बाप के स्नेह-प्यार की गोद में पलकर बड़े होनेवाले बच्चें स्वस्थ मानसिकता अनुभव करते हैं।

4.11.4 परिवर्तित रिश्तें

'मोहभंग' कहानी की नायिका वृद्ध है। वह चाहती है कि उसके बेटे उसे और उसके पति को छोड़कर न जाए पर उसके बेटे नौकरी के कारण घर से दूर चले जाते हैं। जब उन्हें विनय की बीवी के मां बनने की खबर मिलती है तब वह सपने बुनने लगती है कि घर में रौनक आएगी वह विनय की बीवी को अपने पास रखने का फैसला भी करती है। जब उन्हें सुनीता के द्वारा यह खबर मिलती है कि उनकी बहू बच्चा पैदा होने से पहले उसके हॉस्टेल के ॲडमिशन के लिए चिंतित है उसे अपने घरवालों की कोई चिंता नहीं है इस के बारे में मां सोचती है, ''मेरे कान सुन्न पड़ गए थे। आंखों के सामने स्वाति की योजनाएं नाच रही थी उसने बच्चों का भविष्य तो निर्धारित कर लिया, पर हमें तो एकदम भूतकाल में धकेल लिए सारी उमंगों पर उल्लास पर पानी फिर गया।''[38]

नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की मानसिकता में काफी अंतर उपस्थित हुआ है। पुरानी पीढ़ी के बूढ़े अपने बच्चों-पोतों के साथ रहना चाहते हैं मगर उनका मोहभंग होता है। नई पीढ़ी के मां-बाप अपने बच्चों के स्वस्थ भविष्य की उनके पैदा होने से पहले ही उनके स्कूल-हॉस्टेल के ॲडमिशन के लिए कोशिश करते हैं।

आज का युग स्पर्धा - प्रतियोगिता का युग है यह स्पर्धा जन्म से पहले ही शुरू होती है। कल के रंगीन भविष्य की पूर्ति के लिए इच्छा हो या न हो सभी को इसमें सम्मिलित होना पड़ता है। आलोच्य कहानी इसकी साक्षी है।

4.11.5 बेटियों की दूरी

सिर्फ बेटियां होनेवाले परिवारों में बेटियों की शादी के बाद उनके घरों में अकेलेपन की समस्या पाई जाती है। 'संवेदना' कहानी में एक ऐसे परिवार का चित्रण किया है जिसमें मम्मी-पापा और उनकी दो बेटियां हैं। बड़ी बेटी रुचि की शादी पहले हो गई है। छोटी बेटी की शादी की तैयारी चल रही है। बेटा न होने के कारण दोनों पति-पत्नी बहुत अकेलापन महसूस करते हैं। यहां तक की शुचि कुछ दिन अपने ससुराल जाने पर दोनों के गले से खाना भी नहीं उतरता इस अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए मम्मी अपनी बड़ी बेटी का बेटा गोद लेना चाहती है। बेटी इससे इंकार कर देती है। मम्मी की इस बात से पापा भी नाराज होते हैं और वह कहते हैं, ''पागलपन तो तुम कर रहीं हो। एक मां से उसका बच्चा मांग रही हो, एक भरे-पूरे घर से उसकी खुशी छिन रही हो। तुम्हारे हृदय में जो ममता का सागर हिलोरे मार रहा है उसे जाया क्यों करती हो ये प्यार उसे दो जिसका कोई नहीं है। ये घर उसे दो जिसका कोई नहीं है। ये घर उसे दो जिसके सर पर छत नहीं है।''[39]

आलोच्य कहानी में अकेलेपन की समस्या और समस्या का समाधान भी दिखाया गया है। जिसे स्नेह प्यार की आवश्यकता है। उसे स्नेह-प्यार देकर अपना अकेलापन दूर किया जा सकता है। ऐसा कहानीकार का मानना है।

4.11.6 अपनापन

मनुष्य के मन में हीन भावना निर्माण होने पर वह समाज-परिवार से दूर रहने की कोशिश करता है। अलग रहने के कारण उसके मन में घुटन निर्माण होती है। धनाभाव, जातीय संस्कार, सौंदर्य की कमी, बुद्धिमानी का अभाव, शारीरिक विकलांगता या कमजोरी आदि अनेकानेक कारणों से मनुष्य के मन में हीन भावना या हीन ग्रंथी निर्माण होती है। 'प्रश्नों के भंवर' कहानी में चित्रित हीनत्व भाव के प्रश्नों के भंवर में फंसी हुई है। वह घर परिवार से कटी अपने ही विश्व में मातम मनाती रहती है। आलोच्य कहानी में बहू के रूप में एक ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जो हर लड़की की तरह अनेक अरमान अपने दिल में लिए अपने ससुराल आती है, पर ससुराल में उसे हमेशा हीन भाव से देखा जाता है। उसके ससुरालवालें उसे हमेशा वह पति के अनुरूप न होने की उलाहना देते हैं। इसी कारण वह हमेशा उस घर में घुट-घुट कर रहती है और इसी घुटन के कारण उसका उस घर में दम घुटने लगता है। अपनी भावनाओं को व्यक्त करती हुई वह कहती है, ''सभी कहते हैं, ससूर जब तक रहें, ननंदें जब भी आती हैं यहीं सुनाती हैं सास तो रोज ही मेरे नाम से रोती है और उनके सपूत मुंह से तो कुछ नहीं कहते पर हर बात में जता देते हैं।''[40]

4.11.7 मजबूर

कुछ परिवारों में पति और ससुरालवालों के दबाव के कारण स्त्री को अपना खुद का अस्तित्व खोना पड़ता है। उसे हमेशा दूसरों की मर्जी से जीना पड़ता है। उसे अपने मन की बात करने का कभी मौका ही नहीं मिलता इसी कारण उसे घर में घुट-घुट कर जीना पड़ता है। 'बोल री कठपुतली' कहानी की आभा की शादी उसके ससूर ने उसके सर्टिफिकेट्स देखकर की थी। शादी के बाद फौरन उसे नौकरी के कारण घर से दूर एक कस्बे में जाकर रहना पड़ा। इसी बीच उसे दो बच्चें होते हैं बच्चें सास के पास होने के कारण मां के प्रति उनके मन में प्यार बहुत कम निर्माण होता दिखाई देता है। उसकी सास को लकवा मारने के बाद ही उसका तबादला उसी शहर में किया जाता है। जब वह अपने स्कूल के काम में रच बस जाती है तभी उसे अचानक पति के कहने पर नौकरी छोड़नी पड़ती है। यह नौकरी छोड़ते वक्त उसे बहुत तकलिफ होती है, उसे घरवालों के सामने झुकना ही पड़ता है। घर में अपना खाली समय काटने के लिए वह आस पास के बच्चों को लेकर एक संस्था का निर्माण करती है

तभी पति के प्रमोशन और ट्रांसफर के कारण उसे अपनी संस्था छोड़कर जाने की नौबत आती है तो वह अपने पति को समझाने की बहुत कोशिश करती है पति का जवाब होता है, "चियर अप डियर ! तुम चिंता क्यों करती हो ? जानती हो रायपुर में तो अब बड़ा बंगला मिलेगा। उसमें सर्वेन्ट क्वार्टर भी होगा तुम्हें कहीं बाहर जाने की भी जरूरत नहीं है वहीं पर जितने चाहो बच्चें बुला लेना। झुग्गी-झोपडियों की तो इस देश में कमी नहीं है, और बच्चें भी कमबख्त थोक में पैदा करते हैं !"[41] इस प्रकार हर बार की तरह उसे इस बार भी अपने पति की मर्जी से ही अपनी भावनाओं को दाव पर लगाना पड़ता है।

उपरोक्त कहानियों में अकेलेपन एवं घुटन की समस्या का चित्रण कर समाधान भी देने की कोशिश की है। कहानीकार ने घुटन के अनेक कारणों को चित्रित कर मनोवैज्ञानिक पक्ष को दिया है।

4.12 असफल प्रेम

आज के युग में स्त्री-पुरुष के शिक्षा, व्यवसाय और नौकरी के कारण संपर्क के अवसर उपलब्ध हो जाते हैं। इसी कारण दोनों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण निर्माण होता है, और इसका रूपांतर बाद में प्रेम के रूप में दिखाई देता है। विभिन्न धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक कारणों से प्रेम में व्यवधान आ जाता है, जिससे प्रेमियों को अलग होना पड़ता है। इसमें से कुछ प्रेमी ऐसे होते हैं जो बदलती स्थिति और समय के साथ बदल जाते हैं। कुछ संवेदन शील भावुक, एकनिष्ठ प्रेमी होते हैं जो प्रेम में असफलता मिलने पर जिंदगी भर एकाकीपन की सजा भुगतते हैं। कुछ प्रेमी ऐसे होते हैं जिन्हें अनिच्छा तथा जबरदस्ती से किसी और से जुड़ना पड़ता है। कुछ प्रेमी ऐसे भी होते हैं जो शादी कर लेते हैं पर उनका शादी के बाद परिवारवालों से रिश्ता टूटता है।

4.12.1 हीन बर्ताव

अगर कोई लड़का अपने मां-बाप के कारण अपनी प्रेमिका से शादी नहीं कर पाता। उसे जबरदस्ती दूसरी लड़की से शादी करनी पड़ती है तब वह अपनी पत्नी पर सारा गुस्सा उतारता है और उस लड़की को अपने पति के हीन बर्ताव का शिकार होना पड़ता है। 'प्रश्नों के भंवर' कहानी के दवारा मालती जोशी ने असफल प्रेम समस्या को उजागर किया है। इसमें अंजू और सुनील एक ही कॉलेज में होने के कारण दोनों में प्रेम संबंध स्थापित होते हैं। पर सुनील के घरवालें जाति भेद के कारण अंजू के रिश्तें को नकारते हैं और सुनील भी अपने घरवालों के आग्रह के कारण दूसरी लड़की से शादी कर लेता है। अंजू हारकर किसी दूसरे लड़के से शादी कर लेती है, और सुखी जीवन गुजारने लगती है। सुनील और उसकी पत्नी के बीच एक दूरी-सी बन जाती है। सुनील की पत्नी को उसके घरवालें उससे हीन और उसके लायक न होने की उलाहना देते हैं, जब यह बात 10-12 साल

बाद लौटी अंजू को सुनील की पत्नी के द्वारा पता चलती है तो ''अंजू को उबकाई सी आने लगी, 'अजीब है ये लोग ! अपनी गलती का एहसास भी करते हैं, तो किस तरह। अपना सारा अक्रोश इस बेचारी पर उंड़ेल कर फुरसत पा लेते हैं तभी तो बेचारी इतनी चिड़चिड़ी असहिष्णु हो गई है। आखिर उसे भी तो अपना रोष कहीं उतारना होता है।''[42]

इस कहानी में प्रेम के कारण निर्मित समस्या का चित्रण है। अंजू तो इससे बाहर निकलती है पर सुनील जिंदगी भर एकाकीपन की सजा भुगतता है और निर्दोष पत्नी को सजा भोगने के लिए विवश करता है।

4.12.2 धोखा

प्रेम के कारण जिस प्रकार तनाव निर्माण होता है उसी प्रकार प्रेम में धोखा खाने के कारण भी तनाव निर्माण होता है। 'रानियां' कहानी की वंदना कॉलेज में लेक्चरर है। जब उसका स्टेज प्रोग्राम था और उसकी खांसी बंद नहीं हो रही थी तो नाक-कान-गलें वाले डॉ. कुमार की क्लीनिक वह जाती है उसका इलाज करने के बाद जब डॉ. कुमार उसका प्रोग्राम देखने आता है तो उसी समय उनकी दोस्ती हो जाती है। फिर हर कार्यक्रम में वे साथ-साथ जाने लगते हैं। धीरे-धीरे वंदना के मन में प्रेम भावना निर्माण होती है पर कुमार कभी अपने बारे में उसे नहीं बताता वंदना और कुमार हमेशा साथ होने के कारण वंदना की मां कुमार को अपना दामाद मानने लगती है। एक दिन वंदना को पता चलता है कि कुमार की शादी हो गई है और उसे दो बच्चियां भी हैं यही अपने प्यार का परिणाम देखकर वंदना निराश हो जाती है। जब सक्सेना से उसे कुमार की हालात का पता चलता है तो वह कभी कुमार सामने आएगा तो पूछेगी, ''जनाब, हम बीसवीं सदी के अंतिम छोर पर खड़े हैं। तुंम कोई मध्ययुगीन सामंत नहीं हो कि रानियों की फौज पाल लो। एक जो तुम्हारे लिए वारिस पैदा करें, एक जो तुम्हारा मनोरंजन करें और एक जो तुम्हें राजकाज में मदद दे। और आज की नारी इतनी सक्षम है कि वह एक साथ ये सारी भूमिकाएं निभा सकती है। वह एक समय तुम्हारी गृहणी भी हो सकती है सखी भी और सचिव भी पर उसे मौका तो दो।''[43]

इस प्रकार वंदना के माध्यम से कहानीकार मालती जोशी ने नारी की क्षमता और शक्ति का परिचय दिया है। कहानीकार का मानना है कि समय आने पर नारी अपनी क्षमता या योग्यता सिद्ध करती है। आज की नारी बहु-विवाह बहु-पत्नीत्व प्रथा का विरोध करती है। प्रेमभंग का दुःख सहना पसंद करनेवाली आज की नारी सौत बनना पसंद नहीं करती।

4.12.3 रिश्तों में दरार

अगर परिवारवालें अपने बच्चों के प्रेम के खिलाफ हो और बच्चें भागकर शादी कर ले तो प्रेम के कारण

रिश्तों में दरार की समस्या निर्माण होती है। 'विदा' कहानी की सुषमा और जगत एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। जब सुषमा और जगत शादी करने का फैसला करते हैं, तो दोनों सुषमा के घर से शादी की अनुमति लेने के लिए जाते हैं। पर सुषमा के पिता जाति भेद के कारण उसे अस्वीकार करते हैं। तो सुषमा और जगत भागकर शादी करते हैं लेकिन उनके इस कृत्य से घरवालों में और इन दोनों में संघर्ष का वातावरण निर्माण होता है।

इस प्रकार प्रेम करनेवाले सामाजिक बंधनों, प्रथा, परंपराओं को नहीं मानते परंतु सनातनी विचारवाले प्रथा परंपराओं के समर्थक प्रेमियों के मार्ग में धर्म जातीयता की दीवारे खड़ी करतें हैं सदियों से यह संघर्ष शुरू है प्रेम करनेवाले और विरोध करनेवाले नए-नए नामों से सभी युगों में विद्यमान दिखाई देते हैं।

4.13 बेरोजगारी

बेरोजगार वह होता है, जो काम तो करना चाहता है पर काम उपलब्ध नहीं होता। आज बेरोजगारी का क्षेत्र व्यापक बन गया है। बेरोजगार न केवल आर्थिक ढांचे के लिए बल्कि समाज व्यवस्था और शासन तंत्र के लिए भी खतरा बन गई है। बेरोजगारी का संसर्ग व्यक्ति, परिवार, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक जीवन आदि सभी से होता है। इस समस्या ने आज सभी को विचार करने के लिए विवश किया है। आज हमारे देश में ऐसे लाखों युवक हैं जो अपनी शिक्षा तो पूर्ण कर चुके हैं पर नौकरी से वंचित हैं ऐसे युवकों को हमेशा समाज में, घर में अपमानीत होना पड़ता है।

4.13.1 अपमान

मालती जोशी ने अपनी 'एक सार्थक दिन' कहानी में इसी समस्या को चित्रित किया है। मध्यमवर्गीय परिवारों में बेकारी की समस्या प्रमुख रूप में दिखाई देती है। काबिलियत होने पर भी नौकरी के लिए पैसे भरने की हैसियत न होने के कारण और हल्के दर्जे का काम करने में शर्म आने के कारण जादा तर मध्यमवर्गीय परिवारों में बेकारी की समस्या दिखाई देती है। इसमें एक ऐसे युवक का चित्रण किया है जो बेकार होने के कारण उसे छोटी-छोटी चीजों के लिए घरवालों से अपमानीत होना पड़ता है। इसके साथ घरवालों पर बोझ होने के कारण उसे हमेशा पिताजी के ताने सुनने पड़ते हैं। उसके पास इंटरव्यू पर कटिंग करके जाने के लिए भी पैसे नहीं होते। इसी कारण जब वह गुस्से से घर से निकलता है तब रास्ते पर वह कॉलेज के एक युवक से टकराता है और उस मस्ती में झूम रहें युवक को देखकर दिलीप सोचता है ''और दो-चार साल मौज कर ले बेटा;' दिलीप ने मन ही मन कहा, 'फिर तो पटरी पर आना ही है। सब आटे डाल का भाव पता चल जाएगा।' सच तो यह था उस बेफिक्रे युवक को देखकर दिलीप ईर्ष्या से सुलग उठा था।''[44] लेकिन बाद में दिलीप अपनी बेरोजगारी से तंग आकर एक गॅरेज में काम करने लगता है।

इस प्रकार मालती जोशी ने आलोच्य कहानी में बेरोजगारी की समस्या और उस का समाधान भी दिखाया है। उनका मानना है कि अगर अपनी शिक्षा के मुकाबले हल्के दर्जे का काम करना पड़े तो उसमें युवकों को शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। श्रम को प्रतिष्ठा देने से बेरोजगारी की समस्या कुछ हद तक सुलझ जाएगी।

4.14 रूढ़ियों का समर्थन

भारतीय समाज व्यवस्था में रूढ़ियां और अंधविश्वास जैसी समस्याओं का बोलबाला अधिक दिखाई देता है। इस पर कहा जा सकता है कि "दृढ़ विश्वास साध्य प्राप्ति में प्रतिफलित होते हुए देखा गया है। विश्वास की दृढ़ भित्तिपर खड़े होकर जीवन की अधिकाधिक उंचाइयां पार की जा सकती है। किंतु जब ये विश्वास विवेक शून्य हो जाते हैं तब कार्य की संपन्नता में संदेह हो जाता है। धर्मप्राण भारतीय जनता का हृदय संस्कार आस्थावान है। ये आस्था में ही जब जड़ होकर किसी रूप में पूर्ण तया स्थिर हो जाती है तब उसकी संज्ञा होती है अंधविश्वास।"[45] आज भी लोग पढ़े-लिखे हैं पर वह अंधविश्वास और रूढ़ियों पर विश्वास नहीं रखते उनके मन पर बचपन से ही जो संस्कार हुए हैं वह वो भूल नहीं पाते और अनजाने ही उन पुरानी रूढ़ियों का समर्थन करते रहते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि "समाज की घिसी-पिटी रूढ़ियां जड़ संस्कार और मृतप्राय मान्यताएं भी पारिवारिक जीवन के लिए अभिशाप बन जाती है।"[46]

4.14.1 अनुकरण

आज के प्रायः लगभग सभी लोग शिक्षित हैं इसी कारण वे रूढ़ियों, अंधविश्वासों पर भरोसा नहीं रखते कभी-कभी बचपन से घर में हुए संस्कारों के कारण या परंपरागत चली आ रही गलत धारणाओं का अनुकरण करने के कारण यह रूढ़ियों के समर्थन की समस्या निर्माण होती है। 'आखिरी शर्त' कहानी की लेखिका की दीदी अपनी स्कॉलर बेटी की जो आय. ए. एस्. की परीक्षा देनेवाली है, उसकी जबरदस्ती शादी तय कर देती है। इस बात को सुनकर लेखिका अपनी बहन को समझाने लगती है कि ऐसी स्कॉलर लड़की की जल्दी शादी कर देने पर उसका भविष्य बरबाद हो जाएगा और उसे तुम्हारी तरह घुट-घुट कर जीवन बिताना पड़ेगा इस बात का दीदी पर कोई असर नहीं होता। लेखिका जब अपने घर जाती है तब उसे एक खुशखबरी मिलती है कि उसे उसकी बेटी शीतल को 'मद्रास कला केंद्र' की स्कॉलरशिप मिली है। शीतल को अपनी पढ़ाई छोड़कर भरतनाट्यम सीखने के लिए तीन साल के लिए मद्रास जाना पड़ेगा। यह बात सुनकर लेखिका को गुस्सा आ जाता है, क्योंकि वह अपनी बेटी को डॉक्टर बनाना चाहती है ताकि उसका रिश्ता अच्छे घर में हो। उसे पता है कि हिंदुस्तानी लड़के अपनी पत्नी को स्टेज पर नाचता हुआ नहीं देख सकते इस प्रकार अपनी दीदी को नसिहत देने वाली लेखिका

अपनी बेटी के बारे में जब यही सोचती है तब उसे अपने आप पर शर्म आती है। "हां, यही आखरी और अनिवार्य शर्त है मैंने कहा और दोनों हाथों से अपना चेहरा डांप लिया। मेरी प्रगतिशीलता का नकाब किसी ने पकड़कर फेंक दिया और मुझे अब अपने चेहरे पर शर्म आ रही थी।"[47]

इस प्रकार अपने को पढ़े-लिखे कहने वालें लोगों में भी रूढ़ियों का समर्थन करने की मानसिकता होने के कारण उत्पन्न समस्या दिखाई देती है।

4.15 *आत्महत्या*

आत्महत्या वह है जो मनुष्य अपनी मर्जी से करता है। आत्महत्या करने की इच्छा मनुष्य में तब पैदा होती है जब वह अपनी जिंदगी से ऊब जाता है। या अपने आस पास निर्मित परस्थितियों का मुकाबला करने में वह असमर्थ होता है। या खुद का घात करके सारी जिम्मेदारियों से मुक्त होना चाहता है। कभी-कभी परिवार में ऐसी स्थिति परिवारवाले निर्माण करते हैं जिससे परिवार का सदस्य आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जात है।

4.15.1 डर और पलायन

कुछ लोग अपनी जिंदगी में आनेवीली मुसीबतों का सामना करने से डरते हैं इसी कारण वे आत्महत्या का सहारा लेते हैं। 'सती' शीर्षक कहानी के द्वारा मालती जोशी ने एक ऐसी स्त्री का चित्रण किया है जिसका पति एक असाधारण सी बीमारी से ग्रस्त है और कभी भी उसकी मृत्यु हो सकती है। पति की बीमारी के कारण उसकी पत्नी नीलम हमेशा परेशान रहती है, तो उसी बीच उसे कांता भाभी मिल जाती है। वह एक विधवा थी उसके पति एक दुर्घटना में मर गए थे। उसकी जब कांता भाभी से बातचीत होती है तो उसे पता चलता है कि पति के बाद हमारे समाज में एक विधवा स्त्री की क्या हालत होती है। नीलम अपनी चाची विधवा बन जाने पर उसकी क्या हालत हुई थी उसे भी जानती थी। इस प्रकार कांता भाभी और चाची की हालत देखकर उसे यह चिंता खाए जाती है कि इसी प्रकार कल उसका पति बीमारी से मर गया तो उसे भी यह सारे दुःख झेलने पड़ेंगे इसलिए वह आत्महत्या करने का फैसला करती है और सोचती है, "अगर अन्याय का प्रतिकार करने का सामर्थ्य नहीं है तो न सही। उससे बच तो सकती हो।"[48]

आलोच्य कहानी में चित्रित नीलम अपनी जिंदगी से ऊब जाती है और अपने आस पास निर्मित परस्थितियों का मुकाबला करने में समर्थ होने के कारण खुद का घात करके सारी जिम्मेदारीयों से मुक्त हो जाती है।

4.16 अविवाह

अविवाह की समस्या में वह युवक और युवतियां आती हैं जो विवाह की इच्छा तो मन में रखते हैं, पर पारिवारिक परस्थितियों के कारण वह विवाह नहीं कर सकतें। या कोई और कारण जैसे निर्धनता, शारीरिक विकृति, अकुलीनता, निराश्रयता, चारित्रिक दोष, पारिवारिक कलंक, शिक्षा का अभाव, अधिक शिक्षा, अंधविश्वास, गलत विचारधारा, सौंदर्य का अभाव, परिवारवालों का स्वार्थ आदि अविवाह के कारण हो सकते हैं। परिवार में आर्थिक स्थिति से जूझती अविवाहित नारियों की जिन समस्याओं को आज हम देखते हैं। वे प्रायः अधिकतर पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने की ही हैं। परिवार में लड़की अगर प्रथम संतान हो तो उसके कंधे पर गृहस्थी का भार आ जाता है। कभी-कभी पिता की अचानक मृत्यु या बीमारी के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति संभालने के लिए उसे नौकरी करनी पड़ती है। इसी कारण वह अपनी मनचाही जिंदगी नहीं जी सकती। अपने परिवार की छोटे भाई-बहनों की जिंदगी संवारने में वह इतनी खो जाती है कि उसे पता ही नहीं चलता कि उसकी शादी की उम्र बिती जा रही है। परिवारवालें भी उसकी आमदनी से अपनी इच्छाएं पूरी करते हैं। लेकिन उन्हें उसकी शादी की बिल्कुल पर्वाह नहीं होती क्योंकि वह शादी करके चली गई तो परिवारवालों की अवश्यकताओं की पूर्ति कैसे होगी। इसी कारण उसकी शादी की बात परिवारवालें करना ही नहीं चाहते इस प्रकार कुछ परिवारों में अविवाह की समस्या हमें देखने को मिलती है।

4.16.1 कुरूपता

समाज में कुछ ऐसी लड़कियां भी पाई जाती है जो कुरूप होने के कारण उन्हें कोई पसंद नहीं करता। इसलिए उनकी शादी घरवालों के लिए समस्या बन जाती है। 'यातना चक्र' कहानी में मालती जोशी ने एक ऐसी लड़की का चित्रण किया है जो कुरूप होने के कारण उसकी शादी नहीं होती। आलोच्य कहानी की प्रेमा केमेस्ट्री की लेक्चरर है। उसकी उम्र 35 वर्ष की है। लेकिन अभितक वह अविवाहित है, उसकी दो छोटी बहने सुंदर होने के कारण उनकी उससे पहले शादी होकर वे अपनी गृहस्थी में बस गई हैं। लेकिन प्रेमा का हमेशा रिश्तेदारों के सामने प्रदर्शन ही भरता रहा पर कोई उसे पसंद करनेवाला नहीं मिला। सब रिश्तेदार प्रेमा पर व्यंग्य करते हैं। प्रेमा के दिल में भी अब प्रदर्शन बनने की इच्छा शेष नहीं रहती। उसको जब यह पता चलता है कि उसकी छोटी भतिजी जो अब कॉलेज जाने लगी है वह भी उसके साथ रेस में शामिल हो गई है और नीलिमा और सुषमा के समान उसे वह भी पीछे छोड़ देगी। एक दिन उसे सिर्फ दो औरते देखने आती हैं तो वह अपना सारा गुस्सा निकालती है लेकिन उसकी बातों से प्रभावित होकर जब वह लड़का अपने दोनों बच्चों को लेकर प्रेमा को देखने आता है तब प्रेमा सोचती है, "मन हुआ दौड़कर जाऊं और पूंछू 'बच्चों, तुमने मुझे पास किया की नहीं ? ए नन्हें

फरिश्तों ! इस यातना चक्र से तुम्ही मुझे मुक्ति दिला सकते हो। तुम पर ही मेरी आशाएं टिकी हुई है।''[49]

पैदा हुई सभी लड़कियों का विवाह होना ही चाहिए इस प्रकार का कोई कानून या प्रकृति का कोई नियम नहीं है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में अविवाहित लड़की को हीन दृष्टि से देखा जाता है। उसकी स्थिति का नाजायज लाभ उठाने की कोशिश की जाती है। उसका शोषण किया जाता है उसकी इच्छा हो या न हो उसे बार-बार शादी के लिए तैयार किया जाता है।

शादी के बाजार में उस लड़की की अधिक मांग होती है जो सुंदर कमाऊं होती है, कुरूप पराधिन लड़की को हमेशा निराश होना पड़ता है। सौंदर्य के सामने लड़की की विद्वता गौन मानी जाती है। आलोच्य कहानी द्वारा लेखिका ने इस स्थिति का चित्रण किया है।

कुरूप लड़की को अनमेल विवाह, अनेक विवाह, पुनर्विवाह करनेवाले पुरुष के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने पड़ते हैं। आलोच्य कहानी की प्रेमा को दो बच्चों के बाप के साथ विवाह के लिए तैयार होना पड़ता है।

4.16.2 पारिवारिक जिम्मेदारी

लड़की अगर परिवार में प्रथम संतान हो तो उसके कंधों पर सारे परिवार की जिम्मेदारी आ जाती है। या पिता की अचानक मृत्यु के कारण भी उसे नौकरी करके परिवार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी पड़ती है। लेकिन इसी जिम्मेदारी के कारण उसकी शादी की उम्र कब निकल जाती है। इस बात का उसे भी पता नहीं चलता और उसके विवाह की समस्या निर्माण होती है।

'आखिरी सौगात' कहानी में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया गया है। पिता की मृत्यु के बाद सारे घर की जिम्मेदारी सुमन अपने ऊपर लेती है। वह खुद नौकरी करके अपने छोटे भाइयों को पढ़ाती है पर घरवाले उसकी शादी की चिंता बिल्कुल नहीं करते सिर्फ अपना स्वार्थ ही देखते हैं। सुमन अपने पिता की मृत्यु के बाद 18 साल की उम्र से नौकरी करके अपने घर को संभालती है। उसकी मां उसकी शादी की चिंता बिल्कुल नहीं करती। सुमन को इस बात का पता चलता है कि उससे तीन साल छोटे भाई सुनील के लिए मां रिश्तें देख रही है; तो अठ्ठाईस साल की सुमन नाराज होकर अपनी बुआ को अपने लिए लायक वर ढूंढ़ने के लिए कहती है। अपने घरवालों की स्वार्थीवृत्ति को देखकर वह सोचती है, ''जिन लोगों के लिए उसने अपने जीवन का वसंत पतझड़ में बदल दिया, वे लोग ऐसी दुरभिसन्धि में निमन्य हैं, यह जानकर वह एकदम खौल उठी। उसका सारा संयम जाता रहा।''[50]

इस प्रकार कमानेवाली लड़की का विवाह मां-बाप करना नहीं चाहते। उसकी कमाई पर जीविका

चलानेवाले तो लाख कोशिश कर कमानेवाली लड़की को अविवाहित रखने या शादी के बाद भी अपने पास रखने का षड़यंत्र रचते हैं। मां बाप की इस स्वार्थी मनोवृत्ति से लड़की बगावत करती है। आलोच्य कहानी की सुमन भी मां की स्वार्थी मानसिकता से विद्रोह कर अपने लिए सुयोग्य साथी ढूंढ़ने के लिए बुआ से कहती है।

'हमको दियो परदेस' कहानी में परिवार के भविष्य के लिए अपना भविष्य ताक पर रखनेवाली लड़की के रूप में कुसुम का चित्रण किया है। कुसुम पर मां मर जाने के कारण दस साल की उम्र में ही अपने छोटे भाई की जिम्मेदारी आ जाती है। जब वह फायनल की तैयारी करने लगती है तब उसके पिताजी की एक हादसे में आंखें चली जाती हैं। इस प्रकार दोनों की जिम्मेदारी कुसुम पर आ जाने से वह अपनी बनी-बनाई शादी से इंकार कर नौकरी ज्वाईन कर लेती है। सारे परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए उसकी शादी की उम्र ढल जाती है। वह अपनी शादी का खयाल मन से निकालकर बड़ी धूमधाम से अपने भाई की शादी करती है। पर जो बहू घर में आती है वह कुसुम को हमेशा प्रताड़ित करती है। एक दिन उसके मुंह से एक कड़वी बात सुनकर कुसुम भी अपने बारे में सोचने के लिए मजबूर हो जाती है '' 'तो आप क्यों परेशान हो रहीं हैं?' सामने से गुजरते ऑटो रिक्शा को रुकने का संकेत करते हुए रमा ने कहा - 'जिन्हें फिक्र होनी चाहिए, वे तो कान में रुई दिए बैठे हैं, उन्हें तो बस आपकी फिक्र है। बस आपको असुविधा न हो फिर बीवी चाहे भाड़ में जाए हुंह, ननंद न हुई, मेरी सौत हो गई!' ''[51]

'अपराजिता' कहानी के द्वारा मालती जोशी ने 29 वर्षीय अंजू का चित्रण अविवाहित नारी के रूप में किया है। अंजू के पिता की मृत्यु के बाद सारे घर की जिम्मेदारी अंजू पर आ जाती है। वह खुद नौकरी करके अपने परिवार की परवरिश करती है। अंजू की मां भी अंजू की शादी की फिक्र नहीं करती, क्योंकि वह चली गई तो उनके परिवार को कौन देखेगा। अंजू अपने चारों छोटे भाई बहनों की पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने बारे में सोचने की बात करती है। वह कहती है, ''जन्मदाताओं की भूलों का मैं अकेली ही प्रायश्चित्त कर लूंगी। कम से कम चार मासूम जिंदगियां तो उस अभिशाप से बच जाएंगी।''[52]

इस प्रकार कमाने वाली नारी को सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी, धन कमानेवाला बेजान यंत्र मानकर उसके साथ व्यवहार किया जाता है। आलोच्य कहानियों की मां अपनी बेटी के साथ ऐसा ही व्यवहार करती है। वह बेटी की कमाई खाती है मगर उसके विवाह के बारे में सोचती नहीं और अंजू विवशतावश इस भूमिका का निर्वाह कर रही है। वह अपने जन्मदाताओं के भूल का प्रायश्चित लेकर अपने भाई-बहनों की जिंदगी बनाना चाहती है। उसका जीवन त्याग और सर्मपण का अध्याय बन जाता है।

4.17 परित्यक्ता

परित्यक्ता नारी की समस्या प्राचीन काल से हमारी भारतीय संस्कृति में चली आई है। किसी-न-किसी

कारणवश विवाह के कुछ समय बाद पति जब पत्नी का त्याग करता है तब ऐसी स्त्री को परित्यक्ता कहा जाता है। भारतीय समाजव्यवस्था में पत्नी के होते हुए पुरुष अन्य कितनी भी स्त्रियों से विवाह कर सकता है। पत्नी के जीवित होते हुए उसकी उपेक्षा करके वह अन्य स्त्री से विवाह करता है परंतु विड़ंबना यह है कि परित्यक्ता से विवाह करने की मान्यता समाज नहीं देता। सामाजिक मानसिकता यही है कि स्त्री चरित्रहीन होने पर या अन्य किसी गलती के कारण ही पति ने उसका त्याग किया हो तो वह स्त्री लांछित ठहरायी जाती है। जिस घर में उसकी डोली गई है उसी घर से उसकी अर्थी उठेगी यही धारणा माता-पिता के साथ समाज की बोती है। इस परंपरा को खंड़ीत करनेवाली स्त्री की घर-परिवार समाज में इज्जत नहीं होती।

पति द्वारा त्याग दी गई या वह स्वयं पति को छोड़कर आई नारी परित्यक्ता नारी है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष कभी भी अपनी गलतियों की तरफ नहीं देखता उल्टे नारी का कोई भी दोष न होनेपर भी उसे दोषी ठहराता है। यह अन्याय होने पर भी नारी को एक परित्यक्ता बनकर अपना जीवन बिताना पड़ता है। डॉ. योगेश सूरी के अनुसार ''परित्यक्ता नारी वह नारी कहलाती है जो पति द्वारा किन्ही कारणों के होकर परित्याग कर दी जाती है।''[53]

4.17.1 धोखे का शिकार

कभी-कभी लड़केवाले लड़का किसी बीमारी से त्रस्त होने पर भी लड़कीवालों से झूठ बोलकर लड़की को शादी के लिए तैयार करते हैं। पर शादी के बाद लड़के की बीमारी सामने आती है और लड़की को अपने घरवालों की मर्जी से अपने पति का घर छोड़ना पड़ता है। 'मोरी रंग दी चुनरियां' कहानी में लेखिका की एक सहेली जया का चित्रण है जो उसके ही कॉलेज में लेक्चरर है। उसकी शादी एक बहुत अमीर घराने में तय हो जाती है। लेकिन फेरे लेते वक्त दूल्हा गों-गों करता गिरता है और उसकी आंखें कपाल पर चढ़ जाती है, मुंह से झाग-सा निकलने लगता है। यह देखकर सब लोग चकित होते हैं। यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लड़का निमपागल है और उसे मिरगी का दौरा पड़ता है। तो जया ससुराल जाने के बजाय अपने पिताजी की इच्छा के कारण मायके में ही रहती है। इस हादसे के बाद जया अपनी पढ़ाई पूरी करके कॉलेज में लेक्चरर बन जाती है। जया लगभग 35 वर्ष की होने तक अपने पति से दूर रहती है। फिर एक दिन अचानक उसके पति के गुजर जाने की खबर उसे मिलती है। तब उसके मायकेवाले जबरदस्ती उससे सारे रिवाजों की पूर्ति करवाते हैं और अपने पति की जायदाद पर अधिकार जमाने के लिए कहते हैं। तो अपनी सहेली की स्थिति देखकर लेखिका को ऐसे लगता है, ''इस निरानंद जीवन की अभ्यस्त हो चली थी जया कि परिस्थितियों ने फिर नया मोड़ लिया है। जो सुख कभी उसका था ही नहीं, उसके छीन जाने का आत्मीय स्वजन शोक मना रहे हैं और लोकाचार के इस

चक्रव्यूह में वह निरीह लड़की पूरी तरह घिर गई है।''[54] वह जिस पति की कभी पत्नी बनी ही नहीं थी उसके लिए रिवाज पूरे करते समय उसका दम घुट जाता है। वैवाहिक संबंधों में धोखे का शिकार बने स्त्री-पुरुष का जीवन दुःखी बनता है।

4.17.2 कुरूपता

भारतीय संस्कृति में कुछ परिवारों में घर के बड़े लोग ही शादी के रिश्तें तय करते हैं। इसमें लड़की की राय नहीं ली जाती कभी-कभी ऐसी परस्थितियां आ जाती हैं कि शादी के बाद लड़का-लड़की सुंदर न होने का कारण बताकर लड़की को घर से निकाल देता है। 'अक्षम्य' कहानी में मालती जोशी ने परित्यक्ता के रूप में 'बिंदू' का चित्रण किया है। बिंदू की शादी शाम नामक सुंदर युवक के साथ हो जाती है। पर जब वह पहली रात बिंदू को देखता है तो निराश हो जाता है और उसकी सास बहू ने अपने साथ जादा सामान न लाने के कारण नाराज हो जाती है। परिणामतः बिंदू को हमेशा अनचाही बीवी होने के कारण पति की रुखाई और मार का शिकार होना पड़ता है। एक दिन तो शाम उसे अभद्र आचरण का बहाना बनाकर इतना मारता है कि वह अधमरी बन जाती है। उसके ससूर उसे मायके छोड़ आते हैं। इतने बड़े हादसे के बाद भी बिंदू अपनी पढ़ाई पूरी कर कॉलेज की प्राचार्या बन जाती है। लेकिन इतना सबकुछ होने के बाद जब एक दिन बिंदू की भाभी शाम को अपने घर के पास देखती है तो कहती है, ''अरे वा, इतने भोले तो तुम नहीं हो। सुन लिया होगा कि हम लोग अब जायदाद वाले हो गए हैं। पर इतना कानून तो हम भी जानते हैं भैया ! तलाक के बाद अब तुम्हारा कोई हक नहीं बनता।''[55]

4.17.3 विवाहपूर्व प्रेम

कुछ लड़के ऐसे होते हैं जिन्हें अपने घरवालों के दबाव में आकर जबरदस्ती उनकी पसंद की हुई लड़की से शादी करनी पड़ती है। तो वे उस लड़की से शादी तो करते हैं पर शादी के कुछ ही दिनों के बाद उस लड़की को मायके छोड़कर अपनी मर्जी से दूसरी शादी करते हैं तब परित्यक्ता की समस्या निर्माण होती है।

'परायी बेटी का दर्द' शीर्षक कहानी में नीतू के बहन की उसके मां-बाप बड़ी धूमधाम से शादी कर देते हैं। शादी के आठ दिन बाद ही उसका पति उसे मायके झूठ बोलकर छोड़ देता है और खुद दूसरी गृहस्थी बसाने चला जाता है। तब नीतू के घरवालें परेशान हो जाते हैं नीतू की बहन यह बात सुनकर बेहोश हो जाती है। कुछ दिनों के बाद नीतू के बहन की हालत देखकर उसकी मां नीतू की बहन को उसके ससुराल छोड़ आती है लेकिन दो महीने बाद ही नीतू के बहन की मरने की खबर आती है। इस प्रकार अपनी बहन के हत्यारें उसके जीजाजी जब उसके ससुराल में मेहमान बनकर आते हैं तब वह सोचती है, ''मां ने तो केवल मां का कर्तव्य भर किया था। दीदी

की हत्या जिसने की थी, वह भला आदमी मेहमानोंवाले कमरे में मजे से सो रहा है और उसके अतिथ्य का अनचाहा कर्तव्य मुझ पर आ पड़ा है।''[56]

इस प्रकार अनाचाही पत्नी से छुटकारा पाने के लिए उसे उसके मां-बाप के पास भेज दिया जाता है। जब यह संभव नहीं बनता तब उससे छुटकारा पाने के लिए उसकी हत्या की जाती है या उसे आत्महत्या के लिए विवश किया जाता है।

4.18 विधवा

भारतीय समाज में विधवा जीवन अभिशापित है। पुराने जमाने में सती प्रथा होने के कारण विधवा समस्या अस्तित्व में ही नहीं थी। ''जब सती प्रथा पर रोकथाम की गई तो विधवा नारी का वैधव्य सामने आया। समाज ने उनका जीवन नारकीय बना दिया था। वही नारी जो सधवा होने पर फलती-फूलती थी विधवा होने पर वह सुखकर कांट बन जाती थी।''[57]

विधवा की स्थिति सुधार के प्रयास जारी है तथा आज भी समाज में विधवा की स्थिति दयनीय है। पति के बिना स्त्री का कोई व्यक्तित्व ही नहीं स्वीकार किया जाता। पति ही उसके अस्तित्व का सूचक है। विधवा का जीवन हिंदू समाज में पशुओं से थी गया बीता है। हिंदू स्त्री के जीवन की प्रत्येक गतिविधि पति के चारों ओर ही केंद्रित रहती है। पति की मृत्यु के बाद वह अपमानित और पराजित जीवन के धुंधल के में या तो रामभजन करें या आत्महत्या यही दो पर्याय उसके लिए रहते हैं। पुरुष प्रधान समाज में पति की मृत्यु के बाद पत्नी का समाज में कोई महत्त्व नहीं रह जाता उसका जीवन असह्य हो जाता है। परिवारवालें विधवा नारी को उसके पति की जायदाद के लिए भी उसे बहुत सताते हैं। उसकी मर्जी के खिलाफ उसे पति की जगह पर नौकरी करके परिवार की सारी जिम्मेदारीयां निभानी पड़ती है।

मालती जोशी की कहानियों में चित्रित विधवा और उसकी समस्याएं इस प्रकार है -

4.18.1 जायदाद

मालती जोशी ने अपनी कहानी के द्वारा किस प्रकार परिवारवालें अपनी जरूरते पूरी करने के लिए एक विधवा को कटघरें में खड़ा करते हैं। जिसमें उसकी मर्जी का जरा भी खयाल नहीं किया जाता इसका चित्रण किया है। 'मोरी रंग दी चुनरियां' कहानी की जया की शादी धोखे से एक निमपागल और मिरगी के दौरे पड़नेवाले से होती है। यह बात जानकर जया के पिता बेटी को ससुराल न भेजकर अपने पास ही रख लेते हैं। जब जया के घरवालों को जया के पति की मौत की खबर मिलती है। यह भी पता चलता है कि उसके नाम पर पांच लाख रुपए

है। तो जया के मायकेवाले जया को विधवा के रूप में अदालत में खड़ी करके उसे अपने पति का पैसा हासिल करने के लिए कहते हैं। 35 वर्ष तक अपने मायकेवालों के सहारे जीनेवाली जया एक हद तक उसकी बातें सुनती है पर जब यह बातें उसके आपे से बाहर हो जाती है तो वह अपनी पीड़ा को व्यक्त करती है, " 'बड़े भैया,' उसने आश्रुविगलित कंठ से कहा, 'मैं आपके पांव पड़ती हूं। आप चाहे तो मेरी सारी पेंशन, जी. पी. एफ, सी. पी. एफ अपने नाम लिखवा लीजिए, पर मुझ से ऐसा कोई काम न करवाइए कि मैं अपनी ही नजरों में गिर जाऊं। मुझ पर इतनी मेहरबानी जरूर कीजिए।' "[58]

इस प्रकार विधवा की विवशता का लाभ ससुरालवालों के साथ-साथ मायकेवाले भी उठाना चाहते हैं वह कहीं भी सुख शांति से नहीं रह सकती। इस स्थिति को आलोच्य कहानी के द्वारा मालती जोशी स्पष्ट करती है।

4.18.2 अस्तित्व

हमारे समाज में विधवा नारी के साथ इतना बूरा बर्ताव किया जाता है कि कुछ पढ़ी-लिखी लड़कियां विधवा की यातनाएं न सहनी पड़े इसलिए पति की मृत्यु से पहले ही खुद आत्महत्या कर लेती है क्योंकि उन्हें अपने अस्तित्व खोने का डर होताहै। 'सती' शीर्षक कहानी की नीलम का पति बीमार है। जब नीलम को मिलने के लिए कांता भाभी आती है वह नीलम को बताती है कि विधवा होने पर कैसे उन पर अत्याचार किए गए; कैसे उसे जबरदस्ती पति की जगह पर नौकरी करनी पड़ी, कैसे पति के सारे पैसे उससे छिन लिए गए। अब उसे नौकरी करके घर को भी संभालना पड़ता है। इस प्रकार अत्याचारों से तंग आकर कांता बाबी नीलम से कहती है, "जो लोग औरत को जिंदा जला देते हैं उनको तो सरकार सजा देती है, पर जो लोग उसे जिंदगी भर जलाते रहते हैं उनके खिलाफ कोई कानून क्यों नहीं बनता ?"[59]

इसके बाद नीलम की चाची विधवा होने पर जो हालत हुई थी वह याद आती है। किस प्रकार चाची और उनके बच्चों की जिम्मेदारी लेने के लिए कोई तैयार नहीं था। कैसे उनके बच्चों की जिम्मेदारी लेने के लिए तथा चाची सुंदर होने के कारण उन्हें घर में रखना औरते धोखे के समान महसूस करती थी। चाची के श्रृंगार उतारने के क्रूर कृत्य के बारे में नीलम कहती है। "इतना बड़ा अपमान कर सकता है? ऐसा जघन्य कृत्य और वह भी इतनी सारी औरतों के सामने ! शायद इस बहाने सबको चेतावनी दी जाती है कि पति जुआरी, शराबी, अत्याचारी कैसा भी हो उसके चरण धोके पीयों उसकी मंगलकामना करो। तुम्हारा सारा बनाव श्रृंगार उसी के दम से है। वह नहीं रहेगा तो ऐसी दुर्गति होगी।"[60] इस प्रकार कांता भाभी और चाची की हालत देखकर नीलम अपने पति के मरने से पहले खुद ही आत्महत्या कर लेती है। भविष्य का वैधव्य उसे डराता है। वह भविय की

यातनामय जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए मृत्यु को गले लगाती है।

4.18.3 धन

कुछ परिवारों में विधवा को सिर्फ धन कमाने का मशीन माना जाता है। 'कोउ न जाननहार' इस कहानी के द्वारा कहानीकार ने चित्रित किया है कि किस प्रकार एक विधवा को उसकी मर्जी के खिलाफ उसके पति की जगह पर नौकरी कर परिवार की सारी जिम्मेदारियों को निभाना पड़ता है। मनीषा की शादी घरवालों ने बड़े अरमानों के साथ की थी पर उसका पति एक अपरिचित बीमारी से मर जाता है। ससुरालवालें मनीषा को अपशकुंनी मानकर घर से निकाल देते हैं। वह अपने मां-बाप की शरण चाहती है। मां-बाप उसे और उसके दो महीने के शिसु को समस्या समझकर उससे छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। उसके पति की जगह पर उसे नौकरी पर भी लगाया जाता है। पिता की मृत्यु के बाद सारे घर की जिम्मेदारी मनीषा को अपने ऊपर लेनी पड़ती है। वह अपनी कमाई से भाई को डॉक्टर बनाती है दो बहनों की शादी कराती है। वह सिर्फ अपने मायकेवालों के बारे में ही सोचती है। ससुरालवालों के बारे में नहीं सोचती। फिर भी उसके भाई-बहन अपना काम निकालने तक उसकी बातें सुनते हैं और बाद में उसे अपमानीत करते हैं। इस प्रकार अपनी व्यथा को स्पष्ट करती हुई मनीषा अपनी छोटी बहन से कहती है, ''कैसे आचरज की बात है अनु! अशोक को मैंने सिर्फ उसका हक दिया पर उसने उपकार समझकर ग्रहण किया और जीवन भर के लिए मेरा ऋणी हो गया। दोनों मुझे पूजते हैं, पर जिनके लिए मैंने अपना जीवन उत्सर्ग कर दिया वे तो इसे अपना अधिकार मानकर बैठे हुए हैं।''[61] विधवा के धन पर अधिकार जमाने की तिकड़मे रिश्तेदारों द्वारा होती हैं।

4.18.4 अत्याचार का शिकार

'अतिक्रमण' कहानी में मालती जोशी ने वसुधा के द्वारा एक ऐसी नारी का चित्रण किया है जो शादी होने के पश्चात् अपनी सास के आतंक का शिकार थी जब वसुधा के पति की मृत्यु हो जाती है। तो वह अपने मायके में आकर मायकेवालों की इच्छा से दूसरी शादी करने के लिए तैयार हो जाती है। वह अपना बेटा अपनी बहन की गोद देना चाहती है। पर वहां भी उसकी सास उसका पीछा नहीं छोड़ती बल्कि राहुल के नाम पर घर करने के बहाने वसुधा की बहन को उस घर में रहने के लिए मजबूर करना चाहती है।जब वसुधा को इस बात का पता चलता है तो वह अपनी ननंद से कहती है, ''यहां राहुल के हक की चिंता किसी को नहीं है, बुआजी की साजिश ही यह है कि हम लोग आजीवन उस मायावी बंधन में जकडे रहें। उन्होने जिंदगी भर शासन किया है। खाली घर में वह नहीं रह सकती उन्हें एक गुलाम चाहिए इसलिए आपसे बिनती करती हूं दीदी घर में इस प्रस्ताव

की चर्चा भी मत कीजिएगा। मेरे जीजाजी जायदाद के मोह में खींचे चले जाएंगे और मेरी भोली-भाली बहन जीते जी उस नर्क में झोंक दी जाएगी।''[62]

इस प्रकार विधवा को डरा धमकाकर तो कभी लोभ प्रलोभन के बलपर अत्याचार का शिकार बनाया जाता है।

4.18.5 विवशता

कुछ परिवारों में दूसरों पर आश्रित विधवाएं होती हैं। उन्हें उम्र भर दूसरों के सहारे जीना पड़ता है। अपने बच्चों के लिए कुछ करने की उनकी इच्छा होती है और इस इच्छा को पूरी करने के लिए वह गलत तरीका ढूंढ़ निकालती है। 'छीना हुआ सुख' कहानी में चित्रित अनु के पति की विधवा बुआ का चित्रण है। बुआ हमेशा अनु के घर से चीजें चुराकर अपनी बेटी को देती थी। यहां तक की अनु के चार तोले के कंगन भी वह उठाकर अपने पास रख लेती है। अनु बुआ के घर से बाहर निकल जाने पर अपने कंगन निकाल लेती है। और अपनी यह होशियारी अपने पति को बताती है। पर पति बुआ की स्थिति का कारण बताता है कि बुआ की शादी एक सामान्य परिवार में हुई थी। शादी के दस-बारह साल बाद ही उसके पति गुजर गए। फिर किस प्रकार लाचार बनकर अपने भाई के पास उन्हें आना पड़ा और जब तक भैया-भाभी रहें उन्हें अपनी बेटी के लिए कुछ करने का मौका ही नहीं मिला और किस प्रकार भैया-भाभी की मौत के बाद अपने भतिजे के घर की चीजें अपनी बेटी को देने में उन्हें मजा आने लगा। बुआ की स्वाभाविकता स्पष्ट करते हुए वह अनु से कहता है, ''हम-तुम भरे पूरे परिवार में पैदा हुए हैं न अनु। इसलिए नहीं जानते की अभाव क्या है ? पर बुआजी ने जीवन में सिर्फ अभाव ही अभाव देखा है।''[63]

इस प्रकार आलोच्य कहानी के द्वारा अपनी बेटी के लिए कुछ न करने वाली लाचार और विवश विधवा मां का चित्रण किया है। आलोच्य कहानी की मां अर्थाभाव के कारण चोरी करती है उसकी समस्या आर्थिक और मानसिक है।

निष्कर्ष

कभी-कभी परिवार में कुछ ऐसी स्थितियां निर्माण होती हैं जिससे परिवार के सदस्यों में संघर्ष निर्माण होता है। इसे ही 'पारिवारिक समस्या' की संज्ञा दी जाती है। मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं इस प्रकार से हैं - 'पारिवारिक विघटन की समस्या' में परिवार में बहू के आ जाने से उसके गलत बर्ताव के कारण परिवार का विघटन होता है।

'असफल विवाह की समस्या' के कारणों को स्पष्ट करते हुए मालती जोशी ने अर्थाभाव के कारण

पति-पत्नी में तनाव, सफाई की अत्याधिक सजगता के कारण निर्मित तनाव, पति-पत्नी के बीच तीसरे का प्रवेश, शादी के पहले सजाए गए सपने के टूट जाना, पति की दूरी, पति-पत्नी की वैचारिक भिन्नता यह कारण स्पष्ट होते हैं।

'अनचाहे विवाह की समस्या' में जबरदस्ती किसी के साथ रिश्ता जुड़ जाने के कारण पति-पत्नी में तनाव, ईर्ष्या, प्रतिशोध निर्माण होना, प्रेम की असफलता और मां की मर्जी से शादी करने पर पति-पत्नी में अपनेपन का अभाव यह अनचाहे विवाह के कारण है।

'बुढ़ापे की समस्या' में बूढ़ों के साथ उनकी बहुएं अच्छा व्यवहार नहीं करती उनका अपना बेटा उन्हें अनचाहा बोझ समझता है। परिवार में इन लोगों की छोटी सी इच्छा भी पूरी नहीं की जाती। बुढ़ापें में नौकरी छूंट जाने के कारण उनको बेटों के अधिकार से अपमानीत होकर जीवन बिताना पड़ता है। बूढ़ी औरत को दो बेटे होने पर अकेला रहना पड़ता है और प्रेम-स्नेह के लिए तड़पना पड़ता है। घर में बूढ़ों को बोझ समझकर ही उनके साथ व्यवहार किया जाता है। उनको अपनी बहुओं के कारण बेटों से भी अपमानीत होना पड़ता है जिससे उनमें मानसिक तनाव की समस्या दिखाई देती है।

'बदलते रिश्तों की समस्या' में बहू के इशारे पर चलनेवाला बेटा अपने घरवालों की जिम्मेदारी लेने से इंकार कर देता है, नई आई भाभी के आतंक के कारण भाई-बहन के रिश्तें में दूरियां निर्माण होती हैं, एक हादसे के कारण मां और बेटे के बीच दरार निर्माण होती है। शादी के बाद बेटी अपनी सहेलियों और भाभी के साथ रम जाने के कारण वह अपनी मां से दूर हो जाती है, एक साधारण से घर में जब पढ़ी-लिखी अमीर घर की बहू आ जाने से प्रतिष्ठा के खोखले मानदंड की समस्या उत्पन्न हुई दिखाई देती है। इस प्रकार बदलते रिश्तों की समस्याएं हैं।

'अर्थाभाव की समस्या' में अर्थ के अभाव के कारण रिश्तेदारों के द्वारा अपमानास्पद बर्ताव और शोषण, अर्थ की जकड़न के कारण गलत तरीकों को अपनाने की लाचारी, अपनी मूल स्थिति को छुपाकर अमीरी का ढोंग करके सम्मान तथा प्रतिष्ठा हासील की जाती है, अर्थ की कमी के कारण लड़की के विवाह में बाधा, अर्थ के अभाव के कारण लड़की मां-बाप को बोझ लगने लगती है, इसके अभाव के कारण मां को उसके कमानेवाले बेटे से अपमानीत होना पड़ता है, यही अर्थाभाव बेटे की परवरिश न कर पाने के कारण एक मां को अपना बेटा गोद देना पड़ता है। इस प्रकार अर्थाभाव की समस्या के कारणों को मालती जोशी ने स्पष्ट किया है।

'तलाक की समस्या' के कारणों में पत्नी दिखने में कुरूप और पति के लायक न होने के कारण, और पति द्वारा तलाक दी गई बहन के कारण निर्मित समस्या।

'अकेलेपन एवं घुटन की समस्या' में पति-पत्नी में वैचारिक भिन्नता के कारण एक घर में रहते हुए भी

उनमें अकेलेपन एवं घुटन की समस्या दिखाई देती है। मां और बेटे के बीच गलतफहमी के कारण भरे-पूरे घर में भी बेटा अपने आप को अकेला महसूस करता है। मजबूरी के कारण अपने बेटे को गोद देने पर मां उसके बीना घुटन महसूस करती है और उसका बेटा उस अमीर घर में भी अपनी मां और भाई-बहनों के अभाव के कारण घुटन महसूस करता है। बेटों के नौकरी के लिए दूर जाने के कारण मां अपने आप को अकेली समझती है। अपनी आधुनिक विचारों की पत्नी के द्वारा अपनी दो छोटी बेटियों को हॉस्टेल में रखने के कारण पिता अपने आप को अकेला महसूस करता है। जब एक बहू अपने दिल में अनेक अरमान लिए ससुराल आती है पर जब ससुरालवालों के द्वारा हमेशा ही उसे प्रताड़ना मिले तो वह उस घर में घुटन महसूस करती है। कुछ औरतों को हमेशा अपनी इच्छाओं को दूर रखकर अपने पति और ससुरालवालों की मर्जी से ही जीवन व्यतीत करना पड़ता है इसी मजबूरी के कारण वह घुट-घुट कर जीवन व्यतीत करती है।

'असफल प्रेम की समस्या' के कारणों में जब लड़के को अपने मां-बाप-की मर्जी से शादी करनी पड़ती है पर अपनी प्रेमिका से शादी न कर पाने के कारण वह अपना सारा गुस्सा अपनी बीवी के साथ हीन बर्ताव करके निकालता है। किस प्रकार आज की पढ़ी-लिखी लेक्चरर नारी को भी प्रेम में धोखे का शिकार होना पड़ता है प्रेम के कारण रिश्तों में दरार निर्माण हो सकती है इन कारणों को स्पष्ट किया है।

'रूढ़ियों के समर्थन की समस्या' में आज की लगभग सभी औरतें शिक्षित होने पर भी परंपरागत चली आ रही रूढ़ियों का अनजाने ही अनुकरण करती है जिससे यह समस्या निर्माण होती है।

'आत्महत्या की समस्या' में विधवा के जीवन में आनेवाली अनेक मुसीबतों को देखकर कल मुझे भी यह सब न सहना पड़े इसलिए आज की पढ़ी-लिखी नारी पति के मरने के पहले नारी खुद आत्महत्या करती है।

'अविवाहित नारी की समस्या' में कुरूपता के कारण अविवाहित नारी की समस्या, तो घर में प्रथम संतान बेटी होने के कारण पारिवारिक जिम्मेदारी से अविवाहित नारी की समस्या दिखाई देती है।

'परित्यक्ता नारी की समस्या' में धोखे के शिकार के कारण परित्यक्ता नारी की समस्या दिखाई देती है। तो घरवालों के दबाव में आकर शादी करणे के बाद पति अपने विवाह पूर्व प्रेम के लिए अपनी पत्नी को मायके छोड़ आता है। इस प्रकार परित्यक्ता नारी की समस्या दिखाई देती है।

'विधवा नारी की समस्या' में विधवा को अपने पति की जायदाद के लिए मायकेवालों के द्वारा सताया जाता है। हिंदू समाज में विधवा के साथ होनेवाले दर्द भरे व्यवहार के कारण कुछ पढ़ी-लिखी लड़कियां अपने पति के मृत्यु के पहले ही खुद आत्महत्या कर लेती है, तो विधवा को पति के स्थान पर जबरदस्ती नौकरी कर पूरे घर को संभालना पड़ता है। अपने अपने पति का सहारा छूट जाने पर कोई भी रिश्तेदार उसे मदद करने के लिए तैयार नहीं होता, कुछ परिवारों में विधवा नारी का इस्तेमाल सिर्फ पैसे कमाने की मशीन के रूप में किया जाता

है। विधवा को हमेशा अपने ससुरालवालों के अत्याचार का शिकार होना पड़ता है, कुछ विधवा औरतों को तो उम्र भर दूसरों के सहारे जीकर विवश नारी की समस्याओं का चित्रण मालती जोशी की कहानियों में अधिक हुआ है।

इस प्रकार मालती जोशी की कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्याएं स्पष्ट होती हैं। इन कहानियों में मालती जोशी ने सिर्फ मध्यमवर्गीय परिवार, शिक्षित परिवार, लेक्चरर महिलाओं तथा नौकरी करनेवाली औरतों से जुड़ी समस्याओं का ही चित्रण किया है। उन्होंने समकालीन महानगरीय जीवन की युवा अक्रोश, छात्रों की अनुशासन हीनता, सूखा, खाद्यान्नो का अभाव, गरीबी, महंगाई विरोधी आंदोलन, हड़ताल, नौकरशाही, पूंजीवादी व्यवस्था के भयावह परिणाम उसी प्रकार युद्ध विभिषिका, सांप्रदायिकता आदि समस्याओं की ओर लेखिका का ध्यान नहीं गया है।

संदर्भ संकेत

1. डॉ. सीलन वेंकटेश्वरराव - यशपाल के उपन्यास : समस्यामूलक अध्ययन, पृ. 24
2. वही, पृ. 26
3. डॉ. पुष्पपाल सिंह - समकालीन कहानी युग बोध का संदर्भ, पृ. 95
4. डॉ. उषा यादव - हिंदी महिला उपन्यासकारों की मानविय संवेदना, पृ. 156
5. मालती जोशी - अंतिम संक्षेप, पृ. 12
6. महीपसिंह - संचेतना (सितंबर-दिसंबर, 1996), पृ. 13
7. मालती जोशी - एक सार्थक दिन, पृ. 29
8. वही, पृ. 38-39
9. वही, पृ. 41
10. वही, पृ. 94
11. वही, पृ. 91
12. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 87
13. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 102
14. वही - आखिरी शर्त, पृ. 112
15. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 35
16. वही, पृ. 50
17. वही, पृ. 62
18. वही, पृ. 103
19. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 119
20. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 110
21. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 53

22. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 115
23. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 23
24. डॉ. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं, पृ. 184
25. मालती जोशी - आखिरी शर्त, पृ. 120
26. वही, पृ. 32
27. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 144
28. वही, पृ. 134
29. वही, पृ. 63
30. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 109
31. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 124
32. वही, पृ. 25
33. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 58
34. डॉ. उषा यादव - हिंदी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृ. 159
35. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 35
36. वही, पृ. 115
37. वही, पृ. 126
38. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 92
39. वही - आखिरी शर्त, पृ. 105
40. वही - बोल री कठपुतली, पृ. 16
41. वही, पृ. 83-84
42. वही, पृ. 16
43. वही, पृ. 93
44. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 13
45. डॉ. सरला दुआ - आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी, पृ. 178
46. डॉ. उषा यादव - हिंदी महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृ. 164
47. मालती जोशी - आखिरी शर्त, पृ. 16
48. वही - मोरी रंग दी चुनरियां, पृ. 23
49. वही, पृ. 64
50. वही, पृ. 70
51. वही - एक सार्थक दिन, पृ. 23
52. वही, पृ. 70
53. डॉ. योगेश सूरी - यशपाल के उपन्यासो में नारी जीवन की समस्याएं, पृ. 151
54. मालती जोशी - मोरी रंग दी चुनरियां, पृ. 35

55. मालती जोशी - बोल री कठपुतली, पृ. 29
56. वही, पृ. 63
57. डॉ. योगेश सुरी - यशपाल के उपन्यासों में नारी जीवन की समस्याएं, पृ. 161
58. मालती जोशी - मोरी रंग दी चुनरियां, पृ. 49
59. वही, पृ. 13
60. वही, पृ. 18
61. वही - आखिरी शर्त, पृ. 83
62. वही - अंतिम संक्षेप, पृ. 128-129
63. वही, पृ. 74